परमेश्वर के नाम

शांत समय श्रृंखला

परिचय

1. हाकावोड हाशेम - गौरवशाली नाम
2. एलोहिम - परमेश्वर, शक्तिशाली सृष्टिकर्ता.।
3. एल रोई - परमेश्वर जो मुझे देखता है।
4. एल शादाई - सर्वशक्तिमान परमेश्वर
5. एल ओलम - सनातन (अनन्त) परमेश्वर
6. यहोवा यिरे - यहोवा प्रदान करेगा।
7. यहोवा (य ह व ह)
8. यहोवा अडोनाई: प्रभु परमेश्वर या स्वामी (परम परमेश्वर)
9. यहोवा राफा - परमेश्वर जो चंगा करता है
10. यहोवा निस्सी - 'प्रभु मेरा ध्वज है'
11. एल क़न्ना - ईर्ष्यालु परमेश्वर
12. क़दोश यिसरेल- " इस्राएल का पवित्र।"
13. यहोवा शालोम - परमेश्वर शांति है।
14. यहोवा त्सेबाओथ - 'सेनाओं के प्रभु'
15. यहोवा त्सुरी - परमेश्वर मेरी चट्टान है।
16. यहोवा-राह (यहवह-राह (या रोई)) यहोवा मेरा चरवाहा है
17. यहोवा मेलेक - परमेश्वर राजा
18. 'î·šî – 'मेरा पति
19. एल चय | אֵל חַי | 'एल खाह'-ई - जीवित परमेश्वर
20. परमेश्वर मेरा शरणस्थान है [माचसे] और मेरा गढ़ है [मिसगैब]
21. याहवे शाफ़ाट - परमेश्वर हमारा न्यायी
22. मिकवेह इस्राएल - इस्राएल की आशा
23. अद्भुत परामर्शदाता - "पेले योवेस"
24. यहोवा सिदकेनु (त्सिदकेनु) - परमेश्वर हमारी धार्मिकता।
25. एल एलीओन - परमप्रधान परमेश्वर
26. यहोवा स(ह)अम्मा: परमेश्वर वहाँ है।
27. मायेन मीम हियिम - जीवित जल का सोता ।
28. gō·'ă·lî - मेरा मुक्तिदाता
29. अब्बा-पिता
30. इम्मानुएल- परमेश्वर हमारे साथ
31. लोगोस - वचन

उपसंहार

परिचय

जब यीशु ने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया, तो उन्होंने इस प्रकार शुरुआत की: "तो फिर, तुम्हें इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए: सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; “हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।“ (मत्ती 6:9)

किसी चीज़ को पवित्र करने का अर्थ है उसे पवित्र बनाना या अलग करना या पवित्र करना। यीशु ने अपने शिष्यों को परमेश्वर के नाम को पवित्र बनाने के लिए प्रार्थना करना सिखाया।

यूनानी भाषा के इस शब्द 'हैलो (पवित्र)' का उपयोग पतरस द्वारा **1 पतरस 3:15** में किया गया है "पर मसीह को प्रभु जानकर अपने मन में भय मानो।" यहां इसका अनुवाद एनआईवी संस्करण में 'भय ' के रूप में किया गया है। दूसरे शब्दों में, जब यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया कि 'तुम्हारा नाम पवित्र माना जाए', तो वह हमसे अपेक्षा कर रहे हैं कि हमारी प्रार्थनाओं में परमेश्वर का नाम सबसे ऊपर रखा जाए, उनका आदर किया जाए, उन्सहें सम्मान दिया जाएगा।

10 आज्ञाओं में से तीसरी यह है: "तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा॥" (निर्गमन 20:7)

यह आज्ञा परमेश्वर के नाम, परमेश्वर के व्यक्तित्व, परमेश्वर की प्रतिष्ठा के साथ वैसा ही व्यवहार करने के बारे में है जैसे वह हैं, और वह पवित्र है।

जब पौलुस फिलिप्पियों को पत्र लिखता है, तो वह प्रभु यीशु की अधीनता के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया के बारे में इस प्रकार लिखता है:

फिलिप्पियों 2:9-11 *इस कारण परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया, और उस को वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है॥*

परमपिता परमेश्वर ने यीशु के नाम को हर नाम से ऊपर उठाया है की इस संसार के सभी लोग और स्वर्ग के सभी प्राणियों से अपेक्षित है कि वे उसके सामने घुटने टेकें। परमपिता परमेश्वर की महिमा के लिए ऐसा करना ही होगा!

हर मनुष्य को एक नाम दिया जाता है ताकि उसकी पहचान बाकी सभी मनुष्यों से हो सके! लेकिन परमेश्वर एक है, कोई अन्य परमेश्वर नहीं है! उन्हें किसी नाम की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए? इसीलिए, पवित्रशास्त्र में उल्लिखित उनका नाम उनके स्वभाव, गुणों, विशेषताओं आदि पर उल्लेखित है।

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के लिए विभिन्न नाम हैं, प्रत्येक नाम एक अद्वितीय तरीके का प्रतिनिधित्व करता है जिसके माध्यम से परमेश्वर स्वयं को मानवता के सामने प्रकट करते है। ये नाम मात्र शीर्षक या लेबल नहीं हैं; वे परमेश्वर के चरित्र और स्वभाव को दर्शाते हैं।

नहेमायाह की पुस्तक में, अध्याय 9 में एक लंबी प्रार्थना लिखी गई है। यह इस तरह शुरू होती है: *"तेरा महिमायुक्त नाम धन्य कहा जाए, जो सब धन्यवाद और स्तुति से परे है।।"*

'परमेश्वर के नाम' पर यह शांत समय श्रृंखला हमें हर दिन परमेश्वर के नाम/विशेषताओं पर ध्यान करने के लिए है, ताकि उनके नाम और उनके अर्थ पर ध्यान करने से हम उसे बेहतर तरीके से जान सकें, और इसके माध्यम से, हम उनका पहले से कई अधिक सम्मान कर सकें और उनसे प्यार कर सकें। .

हम प्रार्थना करते हैं कि आपको इस बात की गहरी समझ प्राप्त हो सके कि हमारा परमेश्वर कौन है और आप परमेश्वर साथ चलने का आनंद प्राप्त कर सकें ।

दिन 1

הַכָּבוֹד הַשֵּׁם - हाकावोड हाशेम: गौरवशाली नाम

"हाकावोड हाशेम" एक शीर्षक है जो परमेश्वर के नाम की भव्यता, महिमा और सम्मान को दर्शाता है। कावोद शब्द का अर्थ है "महिमा" या "गुरुत्व", जो परमेश्वर की विस्मयकारी उपस्थिति का प्रतीक है। (यशायाह 28:5-8)

भजन संहिता 24:7-10 पढ़ें:7 *हे फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो! हे सनातन के द्वारों, ऊँचे हो जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा। ८ वह प्रतापी राजा कौन है? यहोवा जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है! 9 हे फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो हे सनातन के द्वारों तुम भी खुल जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा! 10 वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है।*

परमेश्वर की महिमा पर ध्यान करें:
परमेश्वर की रचना की विशालता वास्तव में उसकी महिमा की गहराई को बढ़ाती है।

भजन संहिता 19:1
प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन आकाश परमेश्वर की महिमा वर्णन करता है; और आकाश मण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट करता है

रोमियों 1:20
क्योंकि उसके अनदेखे गुण*, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं।

याद रखें कि परमेश्वर की महिमा उसकी रचाई गयी सृष्टि की महिमा से कहीं अधिक है!

- आइए परमईश्वर के गौरवशाली स्वरूप की कल्पना करने की आदत बनाएं, उसकी कल्पना करें गौरवशाली राजा; और श्रद्धा और सत्कार के साथ उसके नाम की स्तुति करो।
- उनके गौरवशाली पवित्र नाम को स्वीकार करें

पवित्रशास्त्र में ऐसे कई उदाहरण दर्ज हैं जहां लोग परमेश्वर की पवित्रता और महिमा की उपस्थिति में बेहोश हो गए, गिर गए, या विहल हो गए, जिससे उनकी दिव्य महिमा उजागर हुई। जैसे सीनै पर्वत पर मूसा (निर्गमन 19:16-20), यशायाह का दर्शन (यशायाह 6:1-5), दानिय्येल की मुठभेड़ (दानिय्येल 10:7-9), यूहन्ना का रहस्योद्घाटन (प्रकाशितवाक्य 1:17)। वही पवित्र और गौरवशाली परमेश्वर, जो पाप रहित है और पाप के साथ नहीं रह सकता, अपनी आत्मा के माध्यम से हमारे भीतर निवास करना चुनता है। यद्यपि हम अत्यधिक दोषपूर्ण और पापी हैं, परमेश्वर का प्रेम उसे हमारे जीवन में प्रवेश करने और हमें भीतर से बदलने के लिए विवश करता है। जैसा

कि 1 कुरिन्थियों 6:19 कहता है, हमारा देह पवित्र आत्मा का भवन है , जिसका अर्थ है कि अकल्पनीय पवित्रता का परमेश्वर हममें अपना निवास्थान बनता है । क्या यह एक बड़े आशीष की बात नहीं ?

विचारक अंक:-

- परमेश्वर की गौरवशाली कृतियों को देखने के लिए अक्सर समय निकालें, जब आप उनकी भव्यता का आनंद लें, तो उन के माध्यम से परमेश्वर से उनके अदृश्य गुणों, अनंत शक्ति और दिव्य प्रकृति को प्रकट करने के की प्रार्थना करें ।
- गहरी श्रद्धा के लिए प्रार्थना करें: परमेश्वर से उसके प्रति अपना विस्मय और श्रद्धा बढ़ाने के लिए कहें। प्रार्थना करें कि वह हर दिन आपके सामने अपनी महिमा को और अधिक प्रकट करे, जिससे आपका हृदय उसके नाम को और भी अधिक सम्मान के साथ धारण करने के लिए परिवर्तित हो जाए।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए:

• यशायाह 6:1-3 पर विचार करें, जहां यशायाह मंदिर में परमेश्वर की महिमा भरते हुए देखता है।

• भजन संहिता 29: 2 परमेश्वर के नाम की शक्ति और महिमा का जश्न मनाता है; इस स्तोत्र में "हाकावोद हाशेम" की समर्थ को पढ़ें और उस पर मनन करें।

• 2 कुरिन्थियों 3:18 उसकी महिमा की उसी छवि में परिवर्तित होने की बात करता है; इस पर विचार करें कि आप परमेश्वर के कावोद को अपने जीवन में कैसे अपना सकते हैं।

जैसे जैसे आप परमेश्वर के प्रत्येक नाम का अध्ययन करते हैं, परमेश्वर आपके दिल और दिमाग को परमेश्वर की महिमा और महिमा की गहरी समझ से भर दें। परमेश्वर आपको हर दिन को इस तरह जीने के लिए प्रेरित करें जो उसके गौरवशाली नाम का सम्मान करता है। उसकी महिमा आप में दिखाई दे, जैसे आप अपने आस-पास के लोगों पर उसकी रोशनी को प्रतिबिंबित करते हैं।.

दिन 2.
אֱלֹהִים एलोहिम - परमेश्वर, शक्तिशाली सृष्टिकर्ता.।

एलोहिम परमेश्वर के लिए इब्रानी शब्द है जो पवित्र शास्त्र के पहले वाक्य में आता है। (उत्पत्ति 1:1 आदि में परमेश्वर (एलोहीम) ने आकाश और पृथ्वी की रचना की।)

जब हम एलोहीम से प्रार्थना करते हैं, तो हमें याद दिलाया जाता है कि उसने ही सब कुछ शुरू किया है। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जिसने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया और प्रकाश को अंधकार से, जल को शुष्क भूमि से, रात को दिन से अलग किया।

परमेश्वर के इस प्राचीन नाम में परमेश्वर की रचनात्मक शक्ति के साथ-साथ उसके अधिकार और संप्रभुता का विचार भी शामिल है। यीशु ने क्रूस से अपनी भावुक प्रार्थना में इस नाम का एक रूप इस्तेमाल किया। "लगभग नौवें घंटे में यीशु ने ऊँचे स्वर में चिल्लाकर कहा, 'एलोई, एलोई, लामा सबाथानी?' (मरकुस 15:34) - जिसका अर्थ है, 'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?' : (भजन संहिता 22:1)

कहा जाता है कि पवित्र शास्त्र में एलोहीम का प्रयोग 2,500 से अधिक बार किया गया है, पवित्र शास्त्र के पहले अध्याय में ही 32 बार। कुछ स्थानों पर यहोवा एलोहीम लिखा हुआ है, जिसका अंग्रेजी में अनुवाद प्रभु परमेश्वर होता है।

हमारा परमेश्वर कौन है? एलोहीम - शक्तिशाली सृष्टिकर्ता!

विचारक अंक:

- आज कुछ समय निकालकर कम से कम उत्पत्ति का पहला अध्याय पढ़ें और हमारे परमेश्वर, शक्तिशाली सृष्टिकर्ता की महानता पर ध्यान करें।
- आप किस तरह से हर दिन सृजन का आनंद लेते हैं और लाभ उठाते हैं?
- सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वेर की कुछ ऐसी बातें लिखें जिनकी आप सराहना करते हैं।
- परमेश्वर की कम से कम कुछ ऐसी रचनाएँ चुनें जो आपको आश्चर्यचकित कर दें। (जैसे तारे, कुछ पौधे, कुछ फूल, आपका अपना शरीर, आदि)। परमेश्वर की रचनात्मकता के प्रति उसकी स्तुति करने के लिए समय निकालें।

- 2 कुरिन्थियों 5:17 “इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।!” यीशु के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें, उसके माध्यम से आप एक नई रचना में बने हैं।
- परमेश्वर की कुछ विशेषताओं और गुणों की एक सूची तैयार करें जिन्हें आप चाहते हैं कि वह आपके अंदर स्थापित करे और उसके लिए एलोहीम - शक्तिशाली सृष्टिकर्ता - से प्रार्थना करें। (जैसे दीनता, पवित्रता, नम्रता आदि) (आत्मा का फल - गलातियों 5:22,23; आत्मिक परिपक्वता के लिए आठ चरित्र लक्षण 2 पतरस 1:5-7)

• चूँकि परमेश्वर ने आपको अपनी छवि अनुसार बनाया है, इसलिए उन्होंने आपमें रचनात्मक शक्ति पैदा की है। आपके रचनात्मक उपहार क्या हैं? आप उन्हें परमेश्वर की महिमा के लिए कैसे उपयोग कर रहे हैं?
• आप जहां भी जाएं, हर चीज को परमेश्वर की रचना के रूप में देखें, उनका आनंद लें और उनकी रचनात्मकता के लिए उनकी प्रशंसा करें।

अतिरिक्त चिंतन के लिए: अय्यूब 38 और 39;

सृजन का अध्यन करें भजन संहिता: 8, 19, 65, 104, और 148।

दिन 3.
एल रोई - परमेश्वर जो मुझे देखता है।

आज हम परमेश्वर का एक बहुत ही खास नाम देखेंगे जो पवित्र शास्त्र में केवल एक बार आता है। यह नाम या इसका इज़हार एक ऐसे व्यक्ति द्वारा दी गई है जो शुरू में परमेश्वर के परिवार का हिस्सा नहीं था, एक ऐसा व्यक्ति जो गलती से परिवार में आ गया, और वह भी बहुत थोड़े समय के लिए। परन्तु परमेश्वर उस नाम से प्रसन्न था और इसलिए परमेश्वर चाहता था कि मूसा उस नाम को अपने वचन में दर्ज करे। ईमानदारी से कहूं तो मेरे लिए यह नाम वास्तव में यह अहसास कराता है कि हमारा परमेश्वर वास्तव में कौन है।

एल-रोई *का* अर्थ है ***"परमेश्वर जो मुझे देखता है।"***

उत्पत्ति 16:1-10 और 13 पढ़ें

कहानी अब्राम और सारै के इर्द-गिर्द घूमती है। प्रभु ने उन्हें बहुतायत में वंशजों का वादा किया (उत्पत्ति 12:2) और बाद में दो बार वादा दोहराया (उत्पत्ति 13:16, उत्पत्ति 15:5)। वाचा किए गए संतान की प्रतीक्षा 10 साल तक चली, और एक कमजोर क्षण में, सारै ने स्थिति की कमान संभाली, और अपने मिस्र की दासी हाजिरा को बच्चा पैदा करने के लिए अब्राम को दे दिया। हाजिरा अब्राम से गर्भवती हुई।

आसान समाधान शीघ्रता से मुसीबतें लाते हैं; अब्राम के घराने में परेशानियाँ बढ़ने लगीं। हाजिरा सारै से घृणा करने लगी और सारै ने फिर से स्थिति पर नियंत्रण कर लिया। सारै ने गर्भवती हाजिरा के साथ दुर्व्यवहार किया और हाजिरा सारै से बचने के लिए घातक, खतरनाक रेगिस्तान में भाग गई। परन्तु प्रभु देख रहे थे।

परमेश्वर ने उसे एक झरने के पास पाया और जब वह सामना करने के लिए तैयार थी तो उसका सामना किया। परमेश्वर ने उसे तीन तथ्य बताए - 'वह कौन है', 'वह कहां से आ रही है', और 'वह कहां जा रही है'। उसने उससे अपनी मालकिन सारै के पास वापस जाने और उसके अधीन रहने को कहा। प्रभु ने उसे एक महान भविष्य का भी वादा किया।

उत्पत्ति 16:13 हाजिरा की गहन प्रतिक्रिया दर्ज करता है: उसने यहोवा को यह नाम दिया, जिसने उस से बात की, तू ही वह परमेश्वर है जो मुझे देखता है, क्योंकि उस ने कहा, जो मुझे देखता है उसे मैं ने अब देख लिया है।

• जब हाजिरा हताश थी और उसे ऐसा महसूस हुआ कि उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है, तो उसे एहसास हुआ कि सर्वशक्तिमान ईश्वर उसके अतीत, वर्तमान और भविष्य को देख रहा है। इस अहसास ने उसे सांत्वना दी और उसे परमेश्वर के निर्देशों के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित किया।

परमेश्वर "वह है जो हमें देखता है"। और वह चाहता है कि हम इन तीन महत्वपूर्ण सत्य को 'देखें' (या महसूस करें) कि।

हम कौन हैं? गलातियों 3:29 - *अब्राहम का असली वंश और वारिस और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस।*
हम कहां से आते हैं? इफिसियों 2:12 - *आइए हम अपने अतीत और अपनी मुक्ति को न भूलें*
हम कहाँ जा रहे हैं? *यूहन्ना 14:1-4* - *स्वर्ग में, हमारे स्वर्गीय पिता के घर में।*

ये प्रश्न हमें निराशाओं और उथल पुथल से भरे इस संसार में विश्वास और विवेक की ओर ले जाएंगे।

विचारक अंक :

- इस बात पर विचार करने के लिए कुछ समय निकालें कि आज आपको कौन सी बात परेशान कर रही है।
- अपनी छुटकारे की कहानी को याद करें, के आप कहाँ से आएं हैं, और परमेश्वर कैसे अपनी मुक्ति की कृपा जारी रखते हैं।
- अपने भविष्य की महिमा, एक स्वर्गीय शरीर में अपने गौरवशाली परिवर्तन की कल्पना करें।

आप जहां भी जाएं, सचेत रूप से अपने आप को सत्य की याद दिलाएं - परमेश्वर एल रोई है - "वह परमेश्वर जो मुझे देखता है।" उसमें आराम और आनंद खोजें।

एल रोई आपको आशीषित करें ।

अतिरिक्त चिंतन के लिए:
उत्पत्ति 16:1-13, गलातियों 3:29, इफिसियों 2:12, यूहन्ना 14:1-4

दिन 4.
אֵל שַׁדַּי एल शादाई - सर्वशक्तिमान परमेश्वर

जब परमेश्वर ने अब्राहम को दर्शन दिए और उसे कई राष्ट्रों का पिता बनाने के अपने वादे की पुष्टि की (उत्पत्ति 17:1-4) तो उसने अपना परिचय अब्राहम के सामने 'एल शादाई' अर्थात 'सर्वशक्तिमान परमेश्वर' के रूप में दिया।

जब हम एल शादाई से प्रार्थना करते हैं, तो हम अपने परमेश्वर की विशेषताओं की सर्वशक्तिमान के रूप में याचना करते हैं, जिनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। इब्राहीम निन्यानवे वर्ष का था जब परमेश्वर ने उसे दर्शन दिए और अब्राहम के साथ अपनी वाचा की पुष्टि की कि वह कई राष्ट्रों का पिता होगा। परमेश्वर ने अब्राहम से यह वादा तब किया जब वह और उसकी पत्नी सारा बच्चे पैदा करने की उम्र से बाहर थे। परमेश्वर यह साबित कर रहा था कि चूंकि वह वास्तव में एल शादाई या सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, जो मानव जाति के लिए असंभव है वह उसके लिए संभव है।

एल शादाई नाम पुराने नियम में 48 बार आता है। इस अद्भुत नाम के माध्यम से, परमेश्वर हमसे यह याद रखने की अपेक्षा करता है कि वह सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिशाली, सर्व-पर्याप्त, असीमित, सर्वश्रेष्ठ और अपने वादों को निभाने में विश्वासयोग्य है।
पवित्र शास्त्र में, हम विभिन्न अवसरों पर इन सभी गुणों को देख सकते हैं।

एल शादाई- सर्वशक्तिमान परमेश्वर!

- ब्रह्मांड के निर्माण में परमेश्वर की प्रभुता और असीमित शक्ति (यिर्मयाह 32:17)
- परमेश्वर विश्वासयोग्य है और उसके पास अपने वादों को पूरा करने की शक्ति है (रोमियों 4:18-22)
- परमेश्वर हमारी देखभाल करने के लिए पर्याप्त है, हम उस पर भरोसा कर सकते हैं (व्यवस्थाविवरण.31:6, इब्रानियों 13:5-6)

समस्त पवित्र शास्त्र में, परमेश्वर बताते है कि वह अल शादाई, सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, उनके पास सर्वशक्तिमान, सर्व-पर्याप्त, सर्वश्रेष्ठ और अपने वादों को निभाने में वफादार होने का गुण है।

विचारक अंक:

- जब आप एल शादाई की आराधना करने जा रहे है, तो परमेश्वर के वादों को पढ़ें जो पूरे हुए (उत्पत्ति 15:13-16, उत्पत्ति 17:1-8, निर्गमन 14:13-14, आदि) और परमेश्वर की प्रभुता पर और उनके अपने वादों को निभाने के प्रति उनकी निष्ठा पर आश्चर्य करें।
- क्या आप पूरे दिल से विश्वास करते हैं कि जिस परमेश्वर की आप आराधना करते हैं वह वास्तव में एल शादाई - सर्वशक्तिमान परमेश्वर है?

यदि आपको कोई संदेह है, तो उन्हें स्वीकार करें और एल शादाई के सामने आत्मसमर्पण करें।

- जो बातें तुम्हें चिंतित करती हैं उनके विषय में लिखो और प्रार्थना करो, उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के हाथों में सौंप दो क्योंकि उसे तुम्हारी परवाह है (1 पतरस 5:7)।

• इस बारे में सोच कर देखें कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने आपके जीवन में कैसे चमत्कार किए और उसकी प्रशंसा स्तुति करें।
एल शादाई पर अपना पूरा भरोसा रखें क्योंकि वह सर्वशक्तिमान, सर्व-पर्याप्त, सर्वश्रेष्ठ और विश्वासी है। वह आपके साथ है.

अतिरिक्त चिंतन के लिए: भजन संहिता 89, भजन संहिता 105

दिन 5.
एल ओलम - सनातन (अनन्त) परमेश्वर

"एल ओलम" (אל עולם) इब्रानी पवित्र शास्त्र में परमेश्वर के नामों में से एक है। "एल" का अर्थ है "परमेश्वर" या "एक मात्र शक्तिशाली", जबकि "ओलम" का अर्थ है " सनातन," "अनन्त," या "सदा के लिए।" यह शब्द, एल ओलम एक साथ मिलकर सनातन परमेश्वर का प्रतीक है, जिसका कोई आरंभ या अंत नहीं है।

यशायाह 40:28 (एनआईवी) कहता है,
क्या तुम नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? यहोवा जो सनातन परमेश्वर (एलोहे याहवे ओवलम) और पृथ्वी भर का सृजनहार है, वह न थकता, न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अगम है। और उसकी समझ का कोई अंदाज़ा नहीं लगा सकता।"

'एल ओलम' नाम हमें याद दिलाता है कि हमारे परमेश्वर का अस्तित्व समय और स्थान से परे है। वह अल्फ़ा और ओमेगा, आरंभ और अंत है। उनका अनंत स्वरुप हमें इस बदलती दुनिया में स्थिरता और सुरक्षा प्रदान करती है।

परमेश्वर का यह नाम, एल ओलम, हमें सिखाता है
- परमेश्वर सनातन राजा, अमर, अदृश्य और एकमात्र परमेश्वर है (1 तीमुथियुस 1:17)।
- उसकी योजनाएँ और उद्देश्य अनन्त हैं (इफिसियों 3:11)।
- उसकी करुणा सदा के लिए है और उसकी सच्चाई पीढ़ियों तक कायम रहती है (भजन 100:5)
- परमेश्वर का वचन सनातन है (भजन संहिता119:89)

हम अपने आस-पास जो कुछ भी देखते हैं वह अस्थायी है और परिवर्तन के अधीन है, लेकिन जैसा कि अब्राहम ने **उत्पत्ति 21:33** में कहा था, *हमारा परमेश्वर सनातन परमेश्वर है* जो हमेशा के लिए रहता है; इसलिए हमें अपने आस-पास जो कुछ भी दिखता है उससे घबराना नहीं चाहिए, बल्कि अपने *सनातन परमेश्वर एल ओलम* पर भरोसा रखना चाहिए, जिसने सब कुछ बनाया और हमेशा के लिए नियंत्रित किया। वह हमारे जीवन के लिए अपनी योजनाओं और वादों को पूरा करने में असफल नहीं होंगे।

"यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि प्रभु यहोवा सनातन चट्टान है।।" ***(यशायाह 26:4)***

आत्मचिंतन.

• भविष्य के बारे में मेरे डर क्या है? एल ओलम की सनातन योजनाएँ मेरे निर्णयों को कैसे आकार दे सकती हैं और मेरी चिंताओं को कैसे शांत कर सकती हैं?
• अपनी सीमित सोच के द्वारा अपने जीवन में काम करने वाली परमेश्वर की शक्ति को मैंने किस तरह से सीमित कर दिया है?

• क्या ऐसे क्षेत्र हैं जहां मैं अस्थायी समाधान ढूंढ रहा हूं? एल ओलम का सनातन स्वरुप मेरे दृष्टिकोण को स्थिरता की ओर मेरा मार्गदर्शन कैसे कर सकती है?
• अनिश्चितता का सामना करने पर भी मैं एल ओलम की संप्रभुता पर कैसे भरोसा कर सकता हूं?
• मैं किन तरीको और आराधना के द्वारा एल ओलम के सनातन शासन को स्वीकार करते हुए उसका सम्मान कर सकता हूं?

अतिरिक्त चिंतन के लिए:

इब्रानियों 13:8, मलाकी 3:6, भजन संहिता 90:1

दिन 6.

यहोवा यिरे יְהוָה יִרְאֶה- यहोवा प्रदान करेगा।

उत्पत्ति 22 में परमेश्वर ने अब्राहम से अपने इकलौते पुत्र, जिससे वह प्रेम करता था, इसहाक को मोरिय्याह पर्वत पर होमबलि के रूप में चढ़ाने के लिए कहा। यह आदेश न केवल अब्राहम के लिए हृदयविदारक था, बल्कि इसहाक के कई राष्ट्रों का पिता होने के बारे में परमेश्वर के पहले वादों के भी विरोधाभासी प्रतीत होता था। लेकिन अब्राहम सुबह जल्दी उठा, सामान बाँधा, अपने बेटे को लिया और परमेश्वर की चुनौतीपूर्ण आज्ञा का पालन किया।

उत्पत्ति 22:7-8 *इसहाक ने अपने पिता अब्राहम से कहा, "हे मेरे पिता," उसने कहा, "हे मेरे पुत्र, क्या बात है?" उसने कहा, "देख, आग और लकड़ी तो हैं; पर होमबलि के लिये भेड़ कहाँ है?" 8 अब्राहम ने कहा, "हे मेरे पुत्र, <u>परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा।</u>" और वे दोनों संग-संग आगे चलते गए।*

जब इसहाक पूछता है, "होमबलि के लिए मेम्ना कहाँ है?" तब अब्राहम यह नहीं कहता, "वोह तुम ही हो।" अब्राहम ने उत्तर दिया, "हे मेरे पुत्र, होमबलि के लिये मेमना परमेश्वर स्वयं ही उपलब्ध (यिरे) कराएगा। "

उत्पत्ति 22:13-14
तब अब्राहम ने आँखें उठाई, और क्या देखा, कि उसके पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ी में फँसा हुआ है; अतः अब्राहम ने जाकर उस मेढ़े को लिया, और अपने पुत्र के स्थान पर होमबलि करके चढ़ाया। 14 अब्राहम ने उस स्थान का नाम **यहोवा यिरे** रखा, इसके अनुसार आज तक भी कहा जाता है, "यहोवा के पहाड़ पर प्रदान किया जाएगा।"

परमेश्वर द्वारा प्रावधान का यह कार्य हमें उसकी विश्वसनीयता और हमारी जरूरतों को पूरा करने की उसकी क्षमता के बारे में सिखाता है, अक्सर उन तरीकों से जिनकी हम उम्मीद नहीं करते हैं। जिस प्रकार परमेश्वर ने अब्राहम को उसके सबसे बड़े परीक्षा के क्षण में प्रदान किया, ठीक उसी प्रकार वह हमें परीक्षा, अनिश्चितता के समय में जब हमें ऐसा लगता है कि हम भटक रहे है परमेश्वर हमें प्रदान करता है ।

जब हम **यहोवा यिरे - परमेश्वर प्रदान करता है'** को जानते हैं तो हम अपने जीवन को कैसे संभालते हैं?

1. **परमेश्वर के प्रावधान पर भरोसा रखें:** कभी-कभी, जब हम जीवन की परीक्षाओं से अनिश्चित या अभिभूत महसूस करते हैं, तो याद रखें कि परमेश्वर हमारी जरूरतों को देखता है और वह हमें प्रदान करने के लिए वफादार है। कभी-कभी, संदेह करना आसान होता है, लेकिन जब हम अपने जीवन पर नजर डालते हैं, तो हम अक्सर देखते हैं कि कैसे परमेश्वर ने हमारी अपेक्षाओं से भी बढ़कर हमें प्रदान किया है। **मत्ती 6:8** इसलिए तुम उनके समान न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या-क्या आवश्यकताएँ है।
2. **चुनौतियों में आज्ञापालन:** अब्राहम के आज्ञापालन का कार्य एक शक्तिशाली अनुस्मारक है कि परमेश्वर का प्रावधान अक्सर आज्ञापालन के बीच में आता है। जबकि अब्राहम को निश्चित नहीं था कि परमेश्वर कैसे कार्य करेगा, कठिन होने के बावजूद भी उसके विश्वास ने उसे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रेरित किया। जब हम विश्वास के साथ कार्य करते हैं, परमेश्वर पर भरोसा करते हुए कि वह हमें प्रदान करेगा, हम स्वयं को उसकी विश्वसनीयता और प्रावधान का अनुभव करने के लिए तैयार करते हैं।
3. **परमेश्वर का समय:** परमेश्वर का प्रावधान सही समय पर आता है। जब अब्राहम ने चाकू उठाया, वह आज्ञा मानने के लिए तैयार था, लेकिन परमेश्वर ने ठीक समय पर हस्तक्षेप किया। इसी प्रकार, जब हम अपेक्षा करते हैं तो परमेश्वर हमेशा प्रदान नहीं कर सकते हैं, लेकिन उनका प्रावधान हमेशा समय पर होता है, न तो बहुत जल्दी, और न ही बहुत देर से। **रोमियों 5:6** में परमेश्वर का समय और उसके पुत्र के लिए उसका प्रावधान प्रदर्शित किया गया है , ***"क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा।***

इसहाक के स्थान पर परमेश्वर द्वारा मेढ़ा प्रदान करने के बाद, अब्राहम ने उस स्थान का नाम "यहोवा यिरे" रखा, जो कि परमेश्वर के प्रावधान का प्रमाण है। उसी तरह, हमें अपने जीवन में परमेश्वर के प्रावधान को स्वीकार करने और आभार और आराधना के साथ जवाब देने के लिए कहा बुलाया गया है । प्रत्येक प्रावधान उनकी भलाई और विश्वसनीयता की गवाही देने का अवसर है ।

विचारक अंक:

1. आज आप किस चीज़ का सामना कर रहे हैं जिसके लिए आपको परमेश्वर के प्रावधान पर भरोसा करने की आवश्यकता है?
2. आप यहोवा यिरे का सही अर्थ और प्रदाता परमेश्वर की प्रकृति को जानकर शांति का अनुभव कैसे कर सकते हैं?
3. किन क्षेत्रों में चुनौतियों के बीच आपको परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना कठिन लग रहा है? (यदि यह व्यावहारिक रूप से कठिन है, तो किसी से बात करें और परमेश्वर के वादों और विश्वासयोग्यता पर वचनों का अध्ययन करें।)
4. क्या ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ आप परमेश्वर के प्रावधान पर भरोसा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं? आज आप उन बातों को परमेश्वर के प्रति कैसे समर्पित कर सकते हैं?
5. यह भरोसा करके कि यहोवा प्रदान करेगा, आप शांति से रहने के लिए क्या कदम उठा सकते हैं?

अतिरिक्त चिंतन के लिए: फिलिप्पियों 4:19, रोमियों 8:32, यिर्मयाह 17:5-8, मत्ती 6:25-33।

दिन 7.

यहोवा יהוה (य ह व ह)

पवित्र शास्त्र के विस्तृत सहमति "स्ट्रॉन्ग नंबर्स" के अनुसार, पुराने नियम में परमेश्वर का नाम 'यहोवा' 6220 बार आता है! इस तरह, यह पवित्र शास्त्र में परमेश्वर का सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला नाम है।

इस नाम की पहली उपस्थिति उत्पत्ति 2:4 में है "आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए अर्थात् जिस दिन (यहोवा) परमेश्वर (एडोनाई) ने पृथ्वी और आकाश को बनाया।

अंग्रेजी पवित्र शास्त्र यहोवा, परमेश्वर का अनुवाद (सभी बड़े अक्षरों) में करती है। (इब्रानी में יהוה (य ह व ह) में बिना किसी स्वर के चार व्यंजन हैं। इसके लिए इस्तेमाल किया जाने वाला तकनीकी शब्द 'टेट्राग्रामटन' था!)

यहोवा नाम इब्रानी शब्द "मैं हूं" से आया है। जलती हुई झाड़ी के पास मूसा की परमेश्वर के साथ हुई बातचीत याद है?

निर्गमन 3:14-15 परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ*।" फिर उसने कहा, "तू इस्राएलियों से यह कहना, 'जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'।" 15 फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, "तू इस्राएलियों से यह कहना, 'तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, अर्थात् अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर, यहोवा, उसी ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है। देख सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी-पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा।'

इस नाम का क्या मतलब है?
यह परमेश्वर की अनंत, स्वयं-अस्तित्व प्रकृति और उनके वादों के प्रति उनकी विश्वसनीयता को दर्शाता है।
“मेरा नाम सदा तक यही रहेगा, पीढ़ी पीढ़ी तक तुम मुझे इसी नाम से पुकारोगे।
य ह व ह नाम इब्रानी पवित्र शास्त्र (पुराने नियम) में परमेश्वर का व्यक्तिगत, अनुबंधित नाम है।

यहोवा नाम परमेश्वर के आत्म-अस्तित्व और आत्मनिर्भरता की बात करता है। वही एकमात्र है जो आत्मनिर्भर और आत्म-अस्तित्व होने का दावा कर सकता है।
उसका न कोई आरंभ है और न ही कोई अंत, वह अनंत है। वह हमेशा यह दावा कर सकता है कि "मैं वही हूं जो मैं हूं" क्योंकि वह पहले, अब और बाद में भी वैसा ही है! वह एकमात्र व्यक्तित्व है जो एक सामान ही रहता है, कभी नहीं बदलता।
याद रखें यीशु हमारे प्रभु स्वयं को 'मैं हूं' के रूप में संबोधित करते थे और स्वयं को यहोवा के रूप में अपनी पहचान स्थापित करते थे।

साथ ही, लोगों को प्रोत्साहित करने का परमेश्वर का पसंदीदा तरीका याद रखें: "मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर-उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ; मैं तुझे दृढ़ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूँगा। (यशायाह 41:10); “मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा; मैं तुम्हें कभी नहीं त्यागूंगा।" (इब्रानियों 13:5)

- जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा (मैं हूं) हमेशा आपके साथ रहता है तो आपको कैसा महसूस होता है?

- क्या आप यहोवा की चिरस्थायी उपस्थिति को याद रखने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

- क्या आप यहोवा को अपनी जीवन यात्रा में अपना सदाबहार साथी और भागिदार मानते हैं क्योंकि वह हमेशा आपके साथ रहता है?

• क्या आप दिन भर उसके साथ बातचीत करके उसे अपना साथी मानना शुरू कर सकते हैं? (याद रखें कि प्रेरित पौलुस ने क्या लिखा था: 1 थिस्स 5:16-18 सदा आनन्दित रहो। 17 निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो। 18 हर बात में धन्यवाद करो: क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यहीं इच्छा है।

दिन 8

यहोवा अडोनाई: प्रभु परमेश्वर या स्वामी (परम परमेश्वर)

यशायाह 25:8 *"वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा (यहोवा अडोनाई) सभी के मुख पर से आँसू पोंछ डालेगा, और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है।" (एनआईवी)*

पवित्रशास्त्र में 400 से अधिक बार *'एडोनाई'* का उपयोग परमेश्वर के नाम के रूप में किया गया है।
אֲדוֹן अडोनाई एक इब्रानी नाम है जिसका मूल (एडॉन) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "परमेश्वर" या "स्वामी", जो उनके अधिकार और संप्रभुता को उजागर करता है। यह दर्शाता है कि परमेश्वर न केवल सृष्टिकर्ता (एलोहिम) है, बल्कि समस्त सृष्टि का शासक और स्वामी (एडोनाई) भी है। वह समस्त सृष्टि का परम राजा/स्वामी है।

परमेश्वर को अडोनाई के रूप में संबोधित करके, हम अपने जीवन में सर्वोच्च प्राधिकारी के रूप में उनके उचित स्थान को स्वीकार करते हैं, उनके नेतृत्व पर भरोसा करते हैं और उनकी इच्छा के प्रति समर्पण करते हैं। "एडोनाई" नाम परमेश्वरऔर उसके लोगों के बीच के संबंध पर भी जोर देता है: वह हमारा रक्षक है (भजन 18:1-2, 91:1-3), मार्गदर्शक (भजन 48:14, नीतिवचन 3:5), और प्रदाता (1तीमुथियुस 6:17, फिलिप्पियों 4:19)। हमें निष्ठा, विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ उसके अनुकूल होने के लिए आमंत्रित किया गया है। उनके राज्य में रहना और उनके धर्मी और न्यायपूर्ण शासन के अधीन रहना एक आशीष और विशेषाधिकार है।

परमेश्वर को अडोनाई के रूप में प्रतिबिंबित करने का मतलब है कि हमें उन्हें अपने प्रभु के रूप में देखने के लिए बुलाया गया है, न केवल शब्दों में बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में। जिस प्रकार एक सेवक अपने स्वामी के मार्गदर्शन पर भरोसा करता है, या प्रजा धर्मी राजा पर भरोसा करती है और उसके प्रति समर्पण करती है, उसी प्रकार हमें परमेश्वर के समझ और निर्देश पर भरोसा करने के लिए आमंत्रित किया गया है।

एडोनाई के प्रति समर्पित होने से अनिश्चितता में शांति आती है, क्योंकि हम उनकी सर्वज्ञ ज्ञान और प्रेमपूर्ण देखभाल से उनकी संपूर्ण योजना में आराम करते हैं।

भजन संहिता 16:2 *कहता है, "मैंने यहोवा से कहा, "तू ही मेरा प्रभु है; तेरे सिवा मेरी भलाई कहीं नहीं।"।"*

भजनहार ने माना कि यहोवा अडोनाई को जानना और उसे पाना उसके जीवन की सबसे अच्छी बात है। जब हम उसके होते हैं, तो हमें याद दिलाया जाता है कि हमारे जीवन में सब कुछ अच्छा अंततः उसी से आता है। परमेश्वर को अडोनाई के रूप में स्वीकार करने का अर्थ है यह पहचानना कि हमारे पास जो कुछ भी है वह सब उसका है। हम केवल उसके प्रबंधक हैं। हमें वफादार प्रबंधकों की तरह रहना चाहिए।

विचारक अंक:

1. क्या मैं वास्तव में अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में परमेश्वर को अपने प्रभु और स्वामी के रूप में देखता हूं, या कुछ ऐसे हिस्से हैं जहां मैं खुद को नियंत्रित करने की कोशिश करता हूं?
2. किन स्थितियों में मुझे परमेश्वर को पूर्ण अधिकार देने में कठिनाई होती है, और मैं उस पर अधिक भरोसा करना और समर्पण करना कैसे सीख सकता हूँ?
3. निर्णय लेने से पहले अपने प्रभु के रूप में, मैं कितनी बार मार्गदर्शन के लिए परमेश्वर की ओर जाता हूँ, उनसे मार्गदर्शन मांगता हूँ?
4. अनिश्चितताओं में या संदेह के समय में, क्या मैं इस आश्वासन पर भरोसा करता हूं कि अदोनाइ, मेरे स्वामी, जानते हैं कि मेरे लिए सबसे अच्छा क्या है और वह नियंत्रण में हैं?
5. अपने कार्यों, विकल्पों, संसाधनों, प्रतिभाओं, उपहारों और विचारों को उनके सम्मान में समर्पित कर करते हुए मैं वास्तव में अदोनाइ के सेवक के रूप में कैसे जीवन व्यतीत कर सकता हूँ ?

एडोनाई पर चिंतन करने से, हमें नियंत्रण की हमारी आवश्यकता को छोड़ने, परमेश्वर की संप्रभुता पर भरोसा करने और हमारे परमेश्वर के रूप में उनके साथ हमारे रिश्ते को गहरा करने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त होती है।

अतिरिक्त चिंतन के लिए:

होशू 24:14-33, कुलुस्सियों 1:16, रोमियों 10:9, रोमियों 6:15-23, मत्ती 7:21-28

दिन 9.

यहोवा राफा (יהוה רָפָא) - परमेश्वर जो चंगा करता है

निर्गमन 15: 22-24

22 तब मूसा इस्राएलियों को लाल समुद्र से आगे ले गया, और वे शूर नामक जंगल में आए; और जंगल में जाते हुए तीन दिन तक पानी का सोता न मिला। 23 फिर मारा नामक एक स्थान पर पहुँचे, वहाँ का पानी खारा था, उसे वे न पी सके; इस कारण उस स्थान का नाम मारा पड़ा। 24 तब वे यह कहकर मूसा के विरुद्ध बड़बड़ाने लगे, "हम क्या पीएँ?"

कल्पना कीजिए कि आप रेगिस्तान में हैं, किसी वाहन में नहीं, बल्कि तेज़ धूप में अपने छोटे बच्चों, बूढ़े माता-पिता, जानवरों और सामान को लेकर रेत में पैदल चल रहे हैं। तीन दिनों के बाद आपको पता चलता है कि आपके सारा पानी का साधन समाप्त हो गया है, आपके सूखे होठों को गीला करने के लिए पानी की एक बूंद भी नहीं है! तभी आप इस स्थान पर पहुंचते हैं जहाँ थोड़ा सा पानी है, और आप उत्सुकता से अपने हाथों को पकड़कर पानी को अपने सूखे मुंह में डालते हैं, केवल इसे थूकने के लिए, इसकी कड़वाहट से भयभीत होकर, इसमें भागते हैं! यह पीने योग्य नहीं था! आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

मैं कल्पना कर सकता हूं कि मैं हैरान, चिंतित, क्रोधित, निराश हो जाऊँगा हूं और निश्चित रूप से किसी को ढूंढूंगा जिस पर दोष लगाया जा सके - ऐसे में उस अगुवे से बेहतर और कौन हो सकता है जिसने सभी को दूध और शहद की धारा वाली भूमि पर ले जाने का वादा किया था?

इस्राएलियों को जो पानी मिला वह इतना कड़वा और पीने योग्य नहीं था कि वे मूसा के विरुद्ध फूट-फूट कर बड़बड़ाने लगे। उनके दिलों में गुस्सा, नाराजगी और कड़वाहट भर गई।

किस बात ने उन्हें बड़बड़ाने पर मजबूर किया? वे इतनी जल्दी उन सभी चमत्कारों को भूल गए जो परमेश्वर ने उन्हें मिस्रियों के हाथों से बचाने में किए थे। वे चिंता और निराशा के आगे झुक गये।

चिंता हमें विश्वास खोने और बड़बड़ाने की ओर ले जाती है जबकि परमेश्वर के चमत्कारों को याद करने से आभार और विश्वास पैदा होता है।

वृक्ष द्वारा चंगाई

निर्गमन 15:25-27 *25 तब मूसा ने यहोवा की दुहाई दी, और यहोवा ने उसे एक पौधा बता दिया, जिसे जब उसने पानी में डाला, तब वह पानी मीठा हो गया। वहीं यहोवा ने उनके लिये एक विधि और नियम बनाया, और वहीं उसने यह कहकर उनकी परीक्षा की, 26 "यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैंने मिस्रियों पर भेजे हैं उनमें से एक भी तुझ पर न भेजूँगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूँ।" 27 तब वे एलीम* को आए, जहाँ पानी के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे; और वहाँ उन्होंने जल के पास डेरे खड़े किए।*

परमेश्वर ने मूसा को एक पेड़ दिखाया और लट्ठे के उस टुकड़े को पानी में फेंककर न केवल उसकी कड़वाहट दूर कर दी, बल्कि उसे मीठा भी बना दिया! हालाँकि इस्राएलियों को शायद परमेश्वर पर भरोसा न करने और बड़बड़ाने के लिए अनुशासन की आवश्यकता थी, परमेश्वर ने पानी को ठीक किया, उसे मीठा बनाया, और उन्हें अपनी संपूर्ण व्यवस्था का उपहार दिया। एलीम

के 12 झरनों से स्थायी जल मिलता था; 70 खजूर के पेड, भरपूर पौष्टिक आहार; और पानी के किनारे ताज़गी भरा आराम!

बीमारियों से उनके लिए परमेश्वर की सुरक्षा और पर्याप्त प्रावधान उसकी आवाज का पालन करने के लिए उनके स्वीकृति पर आधारित थे।

हमारे पापों से उत्पन्न हमारी आत्माओं की कड़वाहट को परमेश्वर ने ठीक किया है, जिन्होंने हमारे पापों को दूर करने के लिए अपने इकलौते पुत्र को क्रूस पर चढ़ा दिया। उन्होंने हमें अपनी पवित्र आत्मा और स्वर्ग में अनन्त परिपूर्ण जीवन भी प्रदान किया, बशर्ते कि हम उनकी आवाज सुनें और उसका पालन करें।

परमेश्वर हमारी आत्माओं का परम उपचारकर्ता है। वह शारीरिक रूप से (2 राजा 5:10), भावनात्मक रूप से (भजन संहिता 34:18), मानसिक रूप से (दानिएल 4:34), और आत्मिक रूप से (भजन संहिता 103:2,3) ठीक करता है। यीशु ने अंधों, लंगड़ों, कोढ़ियों, लकवाग्रस्तों, दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को चंगा किया और मृतकों को जीवित किया। **यशायाह 61:1** कहता है कि उसे टूटे हुए दिलों को चंगा करने, बंदियों को आज़ादी का प्रचार करने और जो बंधे हुए थे उन्हें आज़ाद करने के लिए भेजा गया था। हालाँकि, परमेश्वर की अंतिम योजना शारीरिक उपचार नहीं बल्कि आत्मिक उपचार है। वह क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा हमारे पापों की कड़वाहट को चंगा करता है। **यशायाह 53:5** कहता है कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाते हैं। वह हमें उद्धार के उपहार की मिठास, पवित्र आत्मा और उसके अनंत साथ का भी आशीष देता है। ***इब्रानियों 13:5*** *कहता है कि चंगा करनेवाला यहोवा राफा हमें कभी नहीं छोड़ेगा और न ही हमें त्यागेगा।*
हमें इतना आशीर्वाद दिया गया है कि हम इस यहोवा राफा के राजदूत बन सकते हैं (2 कुरिन्थियों 5:20-21)।

विचारक अंक :

• अपने या दूसरों के जीवन के चमत्कारों की सूची बनाएं, जो चिंता की स्थिति में आपको विश्वास दिला सकते हैं।

• जिन क्षेत्रों के बारे में आप शिकायत करते हैं, कुड़कुड़ाते है, या जिनके बारे में आप कड़वे हो जाते हैं, उन्हें पहचानने और स्वीकार करने के लिए अपने ह्रदय की जांच करें। और उपचार के लिए प्रार्थना करें.

• सूची बनाएं कि कैसे परमेश्वर आपको मेल-मिलाप के लिए एक राजदूत के रूप में उपयोग कर सकते हैं और संसार में आपके आस-पास उपचार लाने के लिए आपका उपयोग कर सकते हैं।

अतिरिक्त चिंतन के लिए :

• 1 पतरस 5:7; मत्ती 19:2; मरकुस 6:56; लूका 19:1-10.

दिन 10.
यहोवा निस्सी - 'प्रभु मेरा ध्वज है'

निर्गमन 17:8-16 पढ़ें।
अमालेकियों ने आकर रिपीदीम में इस्राएलियों पर आक्रमण किया। इस्राएली मिस्र से हाल ही में मुक्त होकर, वाचा की भूमि की यात्रा पर थे। उनके पास अच्छी तरह से प्रशिक्षित सेना नहीं थी, उनमें से किसी ने भी कभी युद्ध नहीं लड़ा था! उन्हें दास के रूप में रखा गया था, लेकिन परमेश्वर के शक्तिशाली हाथ के पराकर्मी कार्य से उन्हें मुक्ति प्राप्त हुई। मूसा ने अपने युवा सहायक यहोशू से ये शब्द कहे: *"हमारे कुछ लोगों को चुनो और अमालेकियों से लड़ने के लिए निकल जाओ। कल मैं हाथ में परमेश्वर की लाठी लेकर पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूँगा।"*

मूसा अपनी लाठी ऊँची करके एक पहाड़ी पर खड़ा था। मूसा और उसके साथियों ने देखा कि जब तक मूसा ने अपने हाथ ऊपर उठाये थे, तब तक यहोशू और उसके लोग जीत रहे थे, और जब वह थक गया तो उसने अपने हाथ नीचे कर लिये, तब शत्रु हावी होने लगे।

हारून और हूर ने एक पत्थर लुढ़काया और मूसा को उस पर बैठने में सहायता दी। उन्होंने मूसा के हाथ ऊंचे करके उसकी सहायता की। यह सूर्यास्त तक चलता रहा। यहोशू और उसकी अप्रशिक्षित सेना ने अमालेकियों की सेना पर बहुत बड़ी जीत हासिल की।

वचन 14 : *तब यहोवा ने मूसा से कहा, "स्मरणार्थ इस बात को पुस्तक में लिख ले और यहोशू को सुना दे कि मैं आकाश के नीचे से अमालेक का स्मरण भी पूरी रीति से मिटा डालूँगा।"*

मूसा ने उस स्थान पर स्मारक के रूप में एक वेदी बनवाई और उस वेदी का नाम 'यहोवा निस्सी' रखा - जिसका अर्थ है 'प्रभु मेरा ध्वज है'। यहां हम मूसा और पूरे इस्राएल को परमेश्वर के शक्तिशाली नेतृत्व का गवाह बनते हुए देखते हैं। यह स्पष्ट था कि परमेश्वर उनका राजा था। वे सभी समझ गए कि यह परमेश्वर ही उनका राजा है जो उनके शत्रुओं के विरुद्ध शक्तिशाली ढंग से उनका नेतृत्व कर रहा है।

"नेस्" - *(ध्वजा)* की धारणा एक दैवीय संकेत के रूप में इस विश्वास में निहित है कि परमेश्वर अपने लोगों के जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, दिशा और आश्वासन प्रदान करते हैं। (संदर्भ स्ट्रांग'स नंबर्स)

जश्न मनाने और सम्मान देने के लिए ध्वज लगाए जाते हैं। उन्हें अपने शूरवीरों का सम्मान करने के लिए अखाड़ों की छतों से लटकाया जाता था, युद्ध जीतकर लौटने वाले सैनिकों के सम्मान में

उठाया जाता था और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अवसरों का जश्न मनाने और यहां तक कि राष्ट्रीय नायकों का सम्मान करने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर प्रदर्शित किया जाता था। सेनाओं को यह याद दिलाने के लिए कि उनके राजा और सेनापति कौन हैं, लड़ाई में ध्वज लहराए जाते हैं। लोग और राष्ट्र अपने देश के प्रति अपनी वफादारी और उस देश का नागरिक होने का गौरव प्रदर्शित करने के लिए अपने राष्ट्रीय प्रतीकों को उठाते हैं। इन सब बातों पर विचार करते हुए, हम देखते हैं कि कैसे परमेश्वर उन सभी के लिए ध्वज है जो उस पर विश्वास करते हैं, उन सभी के लिए जो उसके प्रति वफादार हैं, और उन सभी के लिए जो उसके नेतृत्व पर भरोसा करते हैं।

वेदी का नाम 'यहोवा निस्सी - प्रभु मेरा ध्वज है' रखकर, मूसा ने घोषणा की कि परमेश्वर अपने लोगों को जीत की ओर ले जा रहे हैं। मूसा ने कभी भी जीत का श्रेय लेने की हिम्मत नहीं की। उसने सारी महिमा परमेश्वर को दे दी।

विचारक अंक :

- आपको क्या लगता है कि आपको जीवन में इतना आगे तक कौन लाया है?
- जब आप जीवन में किसी जीत का अनुभव करते हैं, तो क्या आप पहचानते हैं कि परमेश्वर ही वह है जिसने इसे पूरा किया?
- क्या आप उन तरीकों के लिए परमेश्वर की महिमा करते हैं जिन शक्तिशाली तरीकों वह से आपकी अगुवाई कर रहा है?
- जब आप जीवन में नई चुनौतियों का सामना करते हैं, तो क्या आप परमेश्वर की ओर देखते हैं और मानते हैं कि 'यहोवा मेरा ध्वज है' और आत्मविश्वास से उनका सामना सुनिश्चित जीत के साथ करते हैं?
- अपने जीवन की सबसे अद्भुत जीत के विषय में लिखें जो आपको मिलीं क्योंकि आप 'यहोवा निस्सी' का अनुसरण कर रहे थे। परमेश्वर को धन्यवाद दें है और उनमें से कुछ जीत के विषय को किसी दुसरे के साथ बांटें ।

अतिरिक्त चिंतन के लिए:

- भजन संहिता 20, यशायाह 54, 2 इतिहास 20:1-30

दिन 11.
एल क़न्ना - ईर्ष्यालु परमेश्वर

'एल क़न्ना' का अनुवाद 'ईर्ष्यालु परमेश्वर' के रूप में किया जाता है - इब्रानी शब्द क़न्ना का अर्थ है 'ईर्ष्यालु' या 'उत्साही'। पवित्र शास्त्र में 'एल क़न्ना' 6 बार दिखाई देता है।

हमारा सच्चा परमेश्वर प्रेम और रिश्ते का परमेश्वर है। पुराने नियम में, हम देखते हैं कि परमेश्वर इस्राएल के लोगो के साथ अपने जीवनसाथी के जैसा व्यहवहार करता है। **(यिर्मयाह 3:14 "मैं तुम्हारा पति हूँ")। नए नियम में, कलीसिया को यीशु की दुल्हन के रूप में माना जाता है।**

यह एक वाचाबद्ध रिश्ता है. यह एक ऐसा रिश्ता है जिसे परमेश्वर ने अपने अद्भुत प्रेम से शुरू किया है। यह एक विशेष प्रेम है. एक बार जब परमेश्वर का अपने लोगों के साथ रिश्ता बन जाता है, तो वह उम्मीद करता है कि उसके लोग उसके प्रति विश्वासी रहें। इसीलिए पुराने नियम में मूर्ति पूजा को व्यभिचार माना गया है। जब परमेश्वर ने दस आज्ञाएँ दीं, तो उसने इसे निर्गमन 20:3-6 में स्पष्ट रूप से कहा तू मुझे छोड़* दूसरों को परमेश्वर करके न मानना।
4"तू अपने लिये कोई मूर्ति* खोदकर न बनाना, न किसी कि प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। 5 तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ,
6 और जो मुझसे प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करुणा किया करता हूँ।

परमेश्वर हमारा दूल्हा है, जो अपनी दुल्हन के पूरे दिल से प्रेम और प्रतिबद्धता के लिए उत्सुक है। परमेश्वर के प्रति, विश्वासघाती होना अविश्वासी होने से भी अधिक गंभीर अपराध है।

परमेश्वर **व्यवस्थाविवरण 6:14 और 15** में भी इसे स्पष्ट करते है *"तुम पराए देवताओं के, अर्थात् अपने चारों ओर के देशों के लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना; 15 क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच में है **वह जलन रखनेवाला परमेश्वर है**; कहीं ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का कोप तुझ पर भड़के, और वह तुझको पृथ्वी पर से नष्ट कर डाले।*

परमेश्वर उन लोगों से अत्यंत प्रेम करता है जिनके साथ उसने वाचाबद्ध संबंध बनाया है, इसलिए वह अपेक्षा करता है कि उनका प्रेम उसके प्रति ख़ास हो। लेकिन अगर वे किसी अन्य भगवान की पूजा करते हैं, तो वह इसे व्यभिचार के रूप में मानता है और चूंकि वह एक ईर्ष्यालु परमेश्वर है, इसलिए उसका क्रोध उनके खिलाफ भड़क जाएगा क्योंकि उसका प्रेम हमारे प्रति बहुत तीव्र है। परमेश्वर अपने नाम का वर्णन "ईर्ष्यालु" के रूप में करते हैं, वह अपने नाम के प्रति सच्चे हैं।

हाँ, परमेश्वर वास्तव में एक 'ईर्ष्यालु परमेश्वर' है। उसने आपको अपनी छवि में बनाया, यहां तक कि जब हमने अपने पापों के कारण उस छवि को खो दिया, तब भी उसने अपने एकलौते पुत्र को अपने जीवन का बलिदान देने और हमें अपने साथ मिलाने और परमेश्वर की खोई हुई छवि से पुनः मिलाप करने के लिए अपने बहुमूल्य रक्त से शुद्ध करने के लिए भेजा। उसकी भावुक इच्छा है कि हम उसके साथ अनंत काल बिताएँ। जब कोई हमें उससे दूर करने की कोशिश करता है तो वह आपके लिए कुछ भी करेगा, क्योंकि उसका नाम "ईर्ष्यालु" है।

यीशु मसीह ने पिता के साथ अपना जुनूनी और विश्वासी सम्बन्ध दिखाकर हमारे लिए एक उदाहरण स्थापित किया। जब यीशु मसीह ने देखा कि यरूशलेम में परमेश्वर के भवन का

उपयोग पिता की सच्ची आराधना के बजाय व्यापार के लिए किया जा रहा है, तो वह क्रोधित हो गया और उन्हें वहां से भगा दिया।

यूहन्ना 2:16,17 उसने कबूतर बेचनेवालों से कहा, "इन्हें यहाँ से ले जाओ। मेरे पिता के भवन को व्यापार का घर मत बनाओ।" 17 तब उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है, "तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी*।"

• यीशु मसीह की तरह, हमें परमेश्वर के प्रति जोश से भरा होना चाहिए जो 'ईर्ष्यालु' है।

विचारक अंक:

1. आप अपने प्रति परमेश्वर के विशेष प्रेम के बारे में कैसा महसूस करते हैं उन्हें लिखे और उस प्रेम के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।
2. क्या आप परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम में वफादार और जोशीले रहे हैं?
3. क्या कोई ऐसी चीज़ है जो आपको इस प्रकार आकर्षित कर रही है कि परमेश्वर के प्रति आपका प्रेम ठंडा होता जा रहा है? आप ऐसी चीजों का क्या करने जा रहे हैं?
4. **श्रेष्ठगीत 8:6** पढ़ें। इसे संक्षिप्त करें और इसे परमेश्वर और आपके बीच प्रेम की वाचा (या विवाह की शपथ) के रूप में लिखें। उसके नाम के प्रति 'जोशीले' बनो।

अतिरिक्त चिंतन के लिए: होशे की पुस्तक का अध्ययन करें; याकूब 4:4-6, 1 यूहन्ना 4:7-21

दिन 12.

קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל क़दोश यिसरेल- " इस्राएल का पवित्र।"

यशायाह 54:5 *क्योंकि तेरा कर्ता तेरा पति है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा है; और इस्राएल का पवित्र(क़दोश यिसरेल) तेरा छुड़ानेवाला है, वह सारी पृथ्वी का भी परमेश्वर कहलाएगा।*

"पवित्र" (कदोश) के लिए हिब्रू शब्द का अर्थ है "अलग कर देना" या "पवित्र।" पवित्रता न केवल परमेश्वर की नैतिक पूर्णता और पवित्रता की बात करती है, बल्कि किसी भी पापमय या अशुद्ध चीज़ से उसके पूर्ण अलगाव की भी बात करती है। यह घोषित करने के लिए कि परमेश्वर पवित्र है, उसकी अद्वितीय और सर्वोच्च प्रकृति को पहचानना है - जो मनुष्य अपूर्णता और संसार की टूटेपन से बिल्कुल अलग है।

भविष्यवक्ता यशायाह को अपनी महिमा में परमेश्वर का दर्शन हुआ, उन्होंने सेराफिम को यह घोषणा करते हुए सुना: **यशायाह 6:3** *और वे एक दूसरे को पुकार रहे थे:* ***"पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु सर्वशक्तिमान है;*** *सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरपूर है।"*

बहुत ज़ोर देते हुए यह परमेश्वर का एकमात्र साहित्यिक उपकरण में वर्णन है जिसे तीन गुना सूत्र में दोहराया गया है । परमेश्वर कितना पवित्र है? वह सचमुच, सचमुच, सचमुच पवित्र है!

यशायाह 54:5 में, परमेश्वर कहता है कि वह **"इस्राएल का पवित्र"** है, जो इस्राएल (उसके चुने हुए लोगों) के साथ उनके पवित्र, सबसे अलग, और वचनबद्ध परमेश्वर के संबंध पर प्रकाश डालता है। यह शीर्षक उनके लोगों के साथ उनके घनिष्ठ संबंध को दर्शाता है। वह बदले में अपने लोगों से उसी विशेष रिश्ते की अपेक्षा करता है।

*"इस्राएलियों की सारी मण्डली से कह कि तुम पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ। **लैव्यव्यवस्था 19:2** (यह प्रेरित पतरस द्वारा 1 पतरस 1:16 में दुहराया गया है)*

पुराने और नए नियम दोनों में परमेश्वर पवित्रता के लिए एक गंभीर मांग करते हैं, अपने स्वभाव और अपने लोगों के लिए उनकी अपेक्षाओं पर जोर देते हैं। यह वचन केवल एक आदेश नहीं है बल्कि हमारे जीवन में परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करने और उसमें भाग लेने का निमंत्रण है।

यह वचन पवित्रशास्त्र में एक आवश्यक निर्देश है जो बताता है:

1. **परमेश्वर पवित्र है** - सभी अशुद्धता से पूरी तरह परे। वह हर सभी से और हर चीज़ से अलग है।

2. पवित्रता के लिए परमेश्वर की पुकार - वह चाहता है और हमसे अपेक्षा करता है कि उसके बच्चे उसके जैसे ही बनें।

3. **परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का कारण**–उसके प्रति हमारा प्रेम उसके जैसा बनने की हमारी खोज के लिए प्रेरक शक्ति होना चाहिए।

4. ***परमेश्वर के लोगों के रूप में हमारी पहचान,*** हमें पवित्र होना चाहिए, और बाकी संसार से अलग होना चाहिए। (1 पतरस 1:17बी "तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ।")

इस प्रकार, लैव्यव्यवस्था 19:2 इस बात पर जोर देता है कि पवित्रता एक दिव्य गुण है और परमेश्वर के लोगों के लिए एक आकांक्षात्मक स्तर है।

विचारक अंक:

- परमेश्वर की पवित्रता पर ध्यान करने के लिए कुछ समय निकालें।
- - आप 'इस्राएल के पवित्र' के साथ एक विशेष, घनिष्ट संबंध रखने के आशीष को कैसा मानते हैं? क्या यह आपको वैसा पवित्र जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है जैसा वह पवित्र है?

- - परमेश्वर आपको पवित्र होने के लिए बुला रहे हैं। आपको क्या लगता है आपको आज इस बुलाहट का जवाब कैसे देना चाहिए?
- - आपकी सोच, वाणी या कार्यों के किन पहलुओं को परमेश्वर की पवित्रता के साथ जुड़ने की आवश्यकता ? उन्हें लिखें, प्रार्थना करें, और आपको बदलने के लिए पवित्र आत्मा की मदद लें।

अतिरिक्त चिंतन के लिए
1 पतरस 1:13-24, भजन संहिता 71, यशायाह 12

दिन 13.
יְהוָה שָׁלוֹם - यहोवा शालोम - परमेश्वर शांति है।

थियोफनी एक ग्रीक शब्द है जिसका इस्तेमाल लोगों के सामने परमेश्वर के प्रकट होने के लिए किया जाता है। परमेश्वर अब्राहम और अन्य लोगों के सामने प्रकट हुए और उन्होंने उस समय उन्हें नहीं पहचाना। लेकिन ऐसी मान्यता थी कि कोई भी परमेश्वर को देख कर जीवित नहीं रह सकता। इसका मतलब है कि यदि आपने परमेश्वर को देखा तो आप मर जायेंगे! लेकिन शुरुआत में ऐसा नहीं था. उत्पत्ति में, हम पृथ्वी पर एक आदर्श स्थान को देख पाते है , अदन की वाटिका के रूप में, जहाँ आदम और हव्वा ने सबसे उत्तम तरीके से परमेश्वर की उपस्थिति का आनंद लिया जो किसी भी मनुष्य ने कभी अनुभव नहीं किया। परमेश्वर की उपस्थिति के कारण, वे इतनी शांतिपूर्ण स्थिति में थे, भले ही वे नग्न थे, पर इस बात से उन्हें कभी परेशानी नहीं हुई! पृथ्वी पर परम शांति के बारे में हमारे पास यह एक सबसे अच्छी छवि है। एक बार जब पाप मानव जाति में प्रवेश कर गया तो यह सब बिखर गया! जब से मानव जाति ने ऐसी शांति की आशा की तब से परमेश्वर ने उन्हें अपनी उपस्थिति से दूर कर दिया।

न्यायियों के समय में, इस्राएल मूर्ति पूजा में लग गया और एक अनुशासन के रूप में परमेश्वर ने मिद्यानियों को लंबे समय तक आक्रमण करने और उन्हें अपने अधीन बनाने की अनुमति दी। इस्राएल में शांति नहीं थी. लोग अपने परास्त करने वालो के डर से रहते थे और पहाड़ों की दरारों और गुफाओं में रहते थे (न्यायियों 6:2)। उनका भोजन उनके दुश्मनों द्वारा लूट लिया गया था, और उन्हें जीवित रहने के लिए अपना भोजन छिपाना पड़ा था। यही वह समय है जब गिदोन के पास थियोफनी थी - परमेश्वर ने उसे दर्शन दिए। परमेश्वर का उनके लिए पहला संदेश था, "हे शक्तिशाली योद्धा, प्रभु तुम्हारे साथ हैं।"

आप पूरी कहानी न्यायियों की पुस्तक के अध्याय 6 में पढ़ सकते हैं।

जब गिदोन को एहसास हुआ कि उसने प्रभु के दूत को आमने-सामने देखा है, तो उसे डर लगा कि वह मर जाएगा! देखें आगे क्या हुआ:

न्यायियों 6:23-24 *यहोवा ने उससे कहा, "तुझे शान्ति मिले; मत डर, तू न मरेगा।"24 तब गिदोन ने वहाँ यहोवा की एक वेदी बनाकर उसका नाम, 'यहोवा शालोम रखा।' वह आज के दिन तक अबीएजेरियों के ओप्रा में बनी है।*

परमेश्वर ने क्या कहा? "तुझे शान्ति मिले; डरो मत. तुम मरने वाले नहीं हो।" उसे जो शांति मिली उससे उसे सांत्वना मिली; उसने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई और उसका नाम **परमेश्वर शांति है' रखा।**

विचारक अंक

- क्या आप मानते हैं कि 'परमेश्वर शांति है'? क्या आपने परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप प्राप्त कर लिया है और उसके साथ शांति से रह रहे हैं?
- हमें 'प्रभु का भय मानने' और साथ ही परमेश्वर के साथ शांति में रहने के लिए बुलाया गया है। यीशु ने अपने बहुमूल्य जीवन की कीमत देकर हमें परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप और शांति प्रदान की। **रोमियों 8:1** *इसलिये अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।*
- **रोमियों 5:1-2** क्योंकि हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें, 2 जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुँच* भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।
- इसके अलावा, **यूहन्ना 14:27** में यीशु के शब्दों को भी याद रखें *"मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ*, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।*
- क्या आपको इन वादों पर भरोसा है? क्या आप उस शांति में रह रहे हैं जो परमेश्वर ने आपको मुफ़्त में प्रदान की है? क्या आपके अंदर कोई अनचाहा डर है जो आपकी शांति छीन रहा है? उन्हें लिख लें और 'परमेश्वर शांति हैं' से प्रार्थना करें कि वे आपको शांति प्रदान करें।

अतिरिक्त चिंतन के लिए

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अध्याय 21 और 22 का अध्ययन करें और उस जीवन पर ध्यान करें जो परमेश्वर हमारे लिए स्वर्ग में तैयार कर रहे हैं जो अदन की वाटिका में जीने से भी बड़ा है।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आराधना करें जिसे हम **'यहोवा शालोम'** - 'परमेश्वर शांति है' कह सकते हैं!

दिन 14.
याहवेह त्सेबाओथ - 'सेनाओं के प्रभु'

शत्रु पक्ष परमेश्वर को बदनाम करने और उसके नाम का तिरस्कार करने के लिए निरंतर प्रयास करता हैं। शैतान का पूरा उद्देश्य यही है के परमेश्वर के पवित्र नाम को बदनाम करें।
य ह व ह त्सेबाओथ/सबाओथ, का अर्थ है 'सेनाओं का प्रभु"
(स्वर्गदूतों की फौज, इस्राएल की सेना या इस्राएल के लोग, सितारे आदि)। यह एक शक्तिशाली नाम है जो पवित्र शास्त्र में 270 बार देखा जाता है । यह नाम ब्रह्मांड की सभी सेनाओं पर हमारे प्रभु की सार्वभौमिक संप्रभुता को दर्शाता है।

हम पवित्रशास्त्र के उस वचन में जाएंगे जहां यह नाम सबसे पहले लिया गया । यह किसी युद्ध के मध्य में नहीं है, बल्कि यह 1 शमूएल 1:1-11 में एक असहाय बांझ स्त्री की हताश पुकार के मध्य में है।

1 शमूएल 1:11
और उसने यह मन्नत मानी, "हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू अपनी दासी के दुःख पर सचमुच दृष्टि करे, और मेरी सुधि ले, और अपनी दासी को भूल न जाए, और अपनी दासी को पुत्र दे, तो मैं उसे उसके जीवन भर के लिये यहोवा को अर्पण करूँगी, और उसके सिर पर छुरा फिरने न पाएगा।"

हन्ना ने एक ऐसे आदमी से शादी की जो पहले से शादीशुदा था। वह एक पहचान के लिए, अपनी विरासत को आगे बढ़ाने के लिए एक बेटे के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ी, हालाँकि वह बाँझ थी। वह शारीरिक रूप से खाली थी लेकिन वह आत्मिक रूप से परिपूर्ण थी। इसलिए उसने प्रभु को पुकारा, जो उसका एकमात्र सच्चा सहायक और उसका अंतिम सहारा था। हन्ना को एहसास हुआ कि वह अपने गर्भ से बच्चे को बाहर लाने के लिए कुछ नहीं कर सकती; परमेश्वर की उस शक्ति को स्वीकार करते हुए, जिसने शून्य से सब कुछ बनाया, प्रशंसा का यह वाक्यांश उसके हृदय से निकला - "सेनाओं के प्रभु", सबसे शक्तिशाली परमेश्वर, सर्वशक्तिमान।

परमेश्वर उससे प्रसन्न हुआ; उसने उसे एक पुत्र दिया, शमूएल। शमूएल को उसके प्रार्थना भरे जीवन के लिए जाना गया (भजन 99:6), वह एक नाज़ीर था; और वह इस्राएल के इतिहास में कई तरह से सम्मानित किया गया - एक महायाजक, एक भविष्यवक्ता, राजाओं का अभिषेक

करने वाला, इस्राएल का अगुआ या एक न्यायाधीश। परमेश्वर ने उसे 40 वर्षों तक इस्राएल का नेतृत्व करने के लिए उपयोग किया/

भजन संहिता 34:19
मुसीबतें दुष्टों के लिए नहीं, बल्कि धर्मियों और चुने हुए लोगों के लिए भी आरक्षित हैं। मुसीबतों का उद्देश्य यह है कि हम परमेश्वर को खोजें, अपने दिल से उसे पुकारें, उसकी उपस्थिति में रहें, खुद को उसकी शक्ति में छिपाएँ - और यहोवा त्ज़ेबाओथ हमें उन सभी से बचाएगा।

विचारक अंक
आज, जब हम प्रार्थना करें: अपने जीवन और पारिवारिक समूह में गोलियत की, अपने सबसे बड़े संघर्षों और चुनौतियों की सूची बनाएं - इसे परमेश्वर के सामने रखें और परमेश्वर से हस्तक्षेप करने का अनुरोध करें।

अतिरिक्त वचन:
यशायाह 31:4-5 यहोवा त्जेबाओथ सिंह के समान इस्राएल को बचाएगा...
यशायाह 44:6 राजा, मुक्तिदाता, सेनाओं का प्रभु...
यशायाह 47:4 सेनाओं का यहोवा उसका नाम है...
मलाकी 3:10, 12 परमेश्वर के पास लौटने का आह्वान।
2 शमूएल 5:10 सेनाओं का यहोवा दाऊद के संग था

सेनाओं के प्रभु य ह व ह त्जेबोथ का आशीष पाएं ।

दिन 15.
यहोवा त्सुरी (יהוה צוּרִי) - परमेश्वर मेरी चट्टान है।

परमेश्वर का यह गुण भजन संहिता में कई बार प्रकट होता है, विशेष रूप से भजन 18:2 जैसे वचनो में, जहां दाऊद कहता है: *"यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़ और मेरा उद्धारकर्ता है; मेरा ईश्वर मेरी चट्टान है, जिसमें मैं शरण लेता हूं।" मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सींग, मेरा गढ़।"*

इब्रानी शब्द त्सुरी (צוּרִי) मूल शब्द 'त्सुर' से आया है, जिसका अर्थ है "चट्टान" या "पत्थर।" चट्टान की गुणवत्ता हमें अस्थिरता और पाप से दूर दृढ़ विश्वास, शांति और पवित्रता वाले जीवन की ओर ले जाती है। परमेश्वर को "मेरी चट्टान" कहने से सुरक्षा, मुक्ति, शक्ति और स्थिरता की एक शक्तिशाली छवि सामने आती है।

सुरक्षा: चट्टान एक आश्रय के रूप में कार्य करती है, एक ऐसी जगह जहां कोई भी सुरक्षा के लिए दौड़ सकता है। यह एक सुरक्षित स्थान है जहां कोई व्यक्ति खतरे या नुकसान से दूर आश्रय ले सकता है।

मुक्ति:
चट्टान उस स्थान का भी प्रतीक है जहां व्यक्ति दृढ़ता से खड़ा रहता है। यह न केवल खतरे से बचाव है, बल्कि एक स्थिर आधार भी है जो शक्ति और समर्थन प्रदान करता है, जिससे किसी को चुनौतियों के सामने स्थिर और अडिग रहने की सक्षमता प्राप्त होती है।

सामर्थ्य और स्थिरता:
एक चट्टान उस सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व करती है जो आसानी से हिलती या उखड़ती नहीं है

यह जानना कि परमेश्वर कभी न बदलने वाला, स्थिर और विश्वासी परमेश्वर है, आपके विश्वास को मजबूत कर सकता है, जिससे आपको उस चट्टान में निहित रहते हुए चुनौतियों के बीच अपने जीवन को आगे बढ़ाने की आशा मिलती है।

हमारा परमेश्वर कौन है? यहोवा त्सुरी - परमेश्वर मेरी चट्टान!

विचारक अंक :

- आज भजन संहिता 18 पढ़ने के लिए कुछ समय निकालें और हमारे परमेश्वर की महानता पर ध्यान करें, जो हमारे रक्षक हैं और जीवन की मजबूत नींव हैं।

- भय, चिंता या अस्थिरता के समय आप किस ओर जाते हैं? क्या आप आत्मनिर्भरता, लोगों या भौतिक संसाधनों जैसे अस्थायी समाधानों पर निर्भर हैं? या फिर, क्या आप परमेश्वर को अपनी अपरिवर्तनीय चट्टान, आश्रय और किले के रूप में खोजते हैं ?

- कठिन समय में आप आत्मनिर्भरता को झूठी नींव के रूप में कैसे अनुभव करते हैं?

- चट्टान के रूप में परमेश्वर का अपरिवर्तनीय स्वभाव आपके विश्वास को कैसे प्रोत्साहित कर सकता है?

- आप स्वयं को प्रतिदिन कैसे याद दिला सकते हैं कि परमेश्वर आपकी चट्टान है? (दैनिक आदतें जैसे प्रार्थना, उनके वचन पर ध्यान करना, आराधना करना और उनकी विश्वासी होने का जिक्र करना हमें हमारे जीवन की ठोस नींव के रूप में उनकी भूमिका को याद रखने में मदद करता है।)

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस तूफान का सामना करते हैं, इस सच्चाई को याद रखें कि 'याहवे त्सुरी' - 'परमेश्वर मेरा चट्टान' आपके साथ है। इस ठोस नींव पर अपना जीवन बनाएं, और आप जीवन की चुनौतियों के बीच मजबूती से खड़े रहेंगे।

अतिरिकत चिंतन के लिए :

भजन संहिता 62, व्यवस्थाविवरण 32 (मूसा का गीत), मत्ती 7:24-27 पढ़ें।

दिन 16.
यहोवा-राह (यहवह-राह (या रोई) यहोवा मेरा चरवाहा है

परमेश्वर को अक्सर चरवाहा कहा जाता है, जो अपने लोगों की देखभाल, मार्गदर्शन, सुरक्षा और नेतृत्व का प्रतीक है।

यहोवा-राह (यहवह-राह) - यहोवा मेरा चरवाहा है

यह नाम भजन 23 से आया है, जहां दाऊद घोषणा करता है, "यहोवा मेरा चरवाहा है; मुझे कुछ घटी न होगी।" हिब्रू में, राह का अर्थ है "चराना" या "ध्यान देना", और यह एक प्रदाता और रक्षक के रूप में परमेश्वर की भूमिका पर प्रकाश डालता है, अपने लोगों का मार्गदर्शन करता है जैसे एक चरवाहा अपने झुंड का नेतृत्व करता है और उनकी देखभाल करता है।

भजन संहिता 23 हमें हमारे चरवाहे के रूप में परमेश्वर के बारे में कम से कम तीन सच्चाइयों को जानने के लिए प्रोत्साहित करता है।

1. **"मुझे कुछ घटी न होगी" (वचन 1)**

वह वह सब प्रदान करता है जिसकी हमें आवश्यकता है: इसका मतलब यह नहीं है कि हमारी इच्छा सूची को पूरा करना ही उनका एकमात्र कार्य है । हमारे लिए परमेश्वर का प्रावधान उनके ज्ञान और प्रभुता के उद्देश्यों पर आधारित है। लेकिन उसकी भेड़ के रूप में, हम निश्चिंत हो सकते हैं कि *उसकी भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ-साथ बनी रहेंगी;" (वचन 6)।*

2. "वह मुझे सही रास्ते पर ले जाता है" (वचन 3)।

भेड़ों की तरह, हमारे पास जीवन में सही रास्ता खोजने के लिए ज्ञान की कमी है। लेकिन हमारे पास सर्वोत्तम मार्ग दिखाने के लिए ज्ञान और समझ वाला सही चरवाहा है। वह "अपने नाम के लिए" हमारा मार्गदर्शन करता है–उसकी महिमा हमेशा प्राथमिक उद्देश्य है।

3. "मैं किसी बुराई से नहीं डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ है" (वचन 4)

परमेश्वर हमेशा हमारे साथ हैं। परमेश्वर ही एकमात्र चरवाहा है जो हमेशा हमारे साथ रह सकता है क्योंकि वह सर्वव्यापी परमेश्वर है! हमारे चरवाहे के रूप में सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपस्थिति के कारण, हमारे पास डरने का कोई कारण नहीं है। यह सच है, खासकर सबसे अंधेरी घाटियों में या जब बुराई आसपास हो। विश्वासियों की कई पीढ़ियों ने इस शक्तिशाली वायदे का दावा किया है।

जब इस्राएल के अगुवे, जिन्हें परमेश्वर के झुंड की रखवाली करनी थी, स्वार्थी हो गए और परमेश्वर की भेड़ों की परवाह नहीं की, तब परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यहेजकेल के द्वारा इस प्रकार कहा:

“11 "क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता है, देखो, मैं आप ही अपनी भेड़-बकरियों की सुधि लूंगा, और उन्हें ढूँढूगा। जैसे चरवाहा अपनी भेड़-बकरियों में से भटकी हुई को फिर से अपने झुण्ड में बटोरता है, वैसे ही मैं भी अपनी भेड़-बकरियों को बटोरूँगा; मैं उन्हें उन सब स्थानों से निकाल ले आऊँगा, जहाँ-जहाँ वे बादल और घोर अंधकार के दिन तितर-बितर हो गई हों।"* **(यहेजकेल 34:11,12)**

सबसे पहले परमेश्वर ने बाबेल से निर्वासित लोगों को वापस लाकर और उन्हें वाचा की भूमि में फिर से स्थापित करके उस वादे को पूरा किया। इस भविष्यवाणी की अंतिम पूर्ति के रूप में, वह स्वयं मनुष्य रूप में चरवाहा बनकर आये! यीशु हमारा सबसे अच्छा चरवाहा है!

यूहन्ना 10:11-14 में यीशु स्वयं को "अच्छा चरवाहा" के रूप में संदर्भित करते हैं, अपने अनुयायियों के लिए उनके बलिदान प्रेम और उन्हें अनन्त जीवन के लिए मार्गदर्शन करने में उनकी भूमिका पर जोर देते हैं। वह इसकी कीमत चुकाने को तैयार था और यहां तक कि वह आपके और मेरे लिए अपनी प्राण तक देने को तैयार था। उन्होंने उस चीज़ पर विजय प्राप्त की जिससे मानवजाति सबसे अधिक डरती है - 'मृत्यु', और हमें भी उसी जीत का वादा किया! वह स्वर्ग में अपने 'हरे चराई' में हमारे एकत्रित होने की प्रतीक्षा कर रहा है!

हमारे अच्छे चरवाहे यीशु ने वादा किया था ***"और निश्चित रूप से मैं युग के अंत तक हमेशा तुम्हारे साथ हूं।"*** (मत्ती 28:20 ब)

• विचारक अंक :

• 1. भजन संहिता 23 का कौन सा वचन आपकी वर्तमान परिस्थितियों का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

• 2. क्या आप हरे चराइयों का आनंद ले रहे हैं? या, आप किसी अँधेरी घाटी की गहराई में हैं? दोनों हे सूरतों में, आनन्दित रहो और परमेश्वर की प्रेमपूर्ण देखभाल पर भरोसा करें क्योंकि वह हमारा अच्छा चरवाहा है।

• 3. क्या आप अपने चरवाहे के साथ अपने रिश्ते में सुरक्षित हैं या आपको संदेह है?

• 4. क्या आप प्रतिदिन अपने चरवाहे द्वारा मार्गदर्शन और नेतृत्व पाने के इच्छुक हैं? आपके जीवन के किन क्षेत्रों को उसके मार्गदर्शन की आवश्यकता है? उन्हें लिखें और उनके मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें।

• अतिरिक्त चिंतन के लिए :

• यशायाह 40, यहेजकेल 34, यूहन्ना 10:1-18

दिन 17.

יְהוָה מֶלֶךְ - यहोवा मेलेक - परमेश्वर राजा

"मेलेक" एक हिब्रू शब्द है जिसका अर्थ है 'राजा या शासन करना'।

हालाँकि पवित्रशास्त्र में "मेलेक" शब्द कई बार आता है, अधिकांश बार इसका तात्पर्य मानव राजाओं और कभी-कभी परमेश्वर से है।

यशायाह 33:22 ब में यह कहा गया है, "..यहोवा हमारा राजा है; वही हमारा उद्धार करेगा।

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के शासन की धारणा अक्सर अधिकार, न्याय और वाचा के विषयों पर प्रकाश डालते हुए धार्मिक महत्व रखती है। (पवित्र शास्त्र की विस्तृत सहमति, स्ट्रॉन्स कॉनकॉर्डेंस के अनुसार)

यह वचन परमेश्वर के शासन के बारे में बात करता है कि वह हमारा राजा है जो हमारी मुक्ति और सुरक्षा के लिए लड़ता है, वह हमारी जरूरतों को पूरा करता है और हमसे प्यार करता है। पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के शासन की धारणा अक्सर अधिकार, न्याय और वाचा के विषयों पर प्रकाश डालते हुए धार्मिक महत्व रखती है। (संदर्भ स्ट्रांग'स नंबर्स)

यह वचन परमेश्वर के शासन के बारे में बात करता है कि वह हमारा राजा है जो हमारी मुक्ति और सुरक्षा के लिए लड़ता है, वह हमारी जरूरतों को पूरा करता है और हमसे प्यार करता है।

परमेश्वर को हमारे 'सदा के लिए राजा' (भजन संहिता 10:16ए, प्रभु सर्वदा के लिए राजा है), 'सदा का राजा' (यिर्मयाह 10:10 वह जीवित परमेश्वर और सदा का राजा है) और 'महिमा के राजा' (भजन संहिता) के रूप में वचनो में चित्रित किया गया है। 24:7-10)

वह अपनी रचाई हुई समस्त सृष्टि पर शासन करता है और उसके शासन का कोई अंत नहीं है। जब शमूएल इस्राएल का नेतृत्व कर रहा था, तो लोगों ने उन पर शासन करने के लिए एक राजा की मांग की। शमूएल बहुत दुखी हुआ और उसने परमेश्वर से प्रार्थना की। देखें कि परमेश्वर ने कैसे उत्तर दिया:

1 शमूएल 8:6,7 परन्तु जो बात उन्होंने कही, 'हम पर न्याय करने के लिये हमारे ऊपर राजा नियुक्त कर दे,' यह बात शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। 7 और यहोवा ने शमूएल से कहा, "वे लोग जो कुछ तुझ से कहें उसे मान ले; क्योंकि उन्होंने तुझको नहीं* परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है, कि मैं उनका राजा न रहूँ।

देखें परमेश्वर ने क्या कहा: "उन्होंने मुझे अपने राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया है"। परमेश्वर उनका राजा था, वह उनका अद्भुत नेतृत्व कर रहा था, लेकिन उन्होंने दूसरे मनुष्य के रूप में राजा की मांग करके परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया। अपने लोगों पर परमेश्वर के शासन को धर्मतंत्र कहा जाता है। यह मानवजाति के लिए सर्वोत्तम व्यवस्था है। धर्मतंत्र में, परमेश्वर अभी भी

नबी या अगुवे प्रदान करता है की उसकी प्रेरणा के माध्यम से लोगों का मार्गदर्शन करें। ऐसी स्थिति में भी, लोगों को यह मानना होगा कि परमेश्वर उनका राजा है।

भजन संहिता 5:2 हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्वर, मेरी दुहाई पर ध्यान दे, क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूँ।

दाऊद परमेश्वर को अपना राजा कहता है। और परमेश्वर के राजत्व का तात्पर्य सभी चीज़ों पर उसके पूर्ण अधिकार, शक्ति और नियंत्रण से है। दाऊद इस भजन में एक बात बिल्कुल स्पष्ट करते हैं, कि हमारा परमेश्वर एकमात्र धार्मिक राजा है जो न्यायपूर्वक शासन करता है।

इस्राएलियों ने पवित्रशास्त्र के समय में सभी दुष्ट और बुरे राजाओं को देखा है, दाऊद ने भी ऐसा ही देखा। लेकिन वह कहते हैं कि परमेश्वर ही एकमात्र राजा है जो पवित्र, धर्मी और परिपूर्ण है।

यहोवा मेलेक - परमेश्वर हमारे राजा ने उनके अपने वचनो से प्रेरित अपनी आज्ञाएँ - "पवित्रशास्त्र" के माध्यम हमें दी हैं । जब हम परमेश्वर को अपना राजा मानते हैं, तो हमें उसके नियमों के प्रति समर्पित होना चाहिए। जब हम बपतिस्मा लेते हैं, तो हम घोषणा करते हैं कि 'यीशु ही प्रभु हैं' इसका मतलब है कि हम सार्वजनिक रूप से घोषणा कर रहे हैं कि अब तक, मैं अपने जीवन का शासक था, लेकिन अब, मैं यीशु को अपने राजा, प्रभु और शासक के रूप में स्वीकारता हूं।

जब हम अपने आप को पूरे दिल से यीशु को अपने राजा के रूप में समर्पित करते हैं, तो हम उनके राज्य में प्रवेश कर रहे हैं। नए नियम में, हमें मसीहशासन में रहने के लिए बुलाया गया है - जहां मसीह का शासन है।

पतरस ने **1 पतरस 2:9** में लिखा है, पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।

जब हम यहोवा मेलेक - परमेश्वर हमारा राजा है की घोषणा करते हैं, तो हम यह भी वादा कर रहे हैं कि हम उसकी स्तुति करके और अधिक से अधिक उसके जैसा बनकर उसकी महिमा के लिए जिएंगे। हमारे जीवन को देखकर, हमारे आस-पास के लोगों को यहोवा मेलेक की जय जयकार करनी चाहिए।

विचारक अंक :

- क्या परमेश्वर आपके जीवन का मेलेक (राजा) है, क्या आपने खुद पर शासन करने के लिए खुद को पूरी तरह से उसे सौंप दिया है?
- क्या आप एक पवित्र जीवन का अनुसरण कर रहे हैं जो आपके बुलावे के योग्य है (उनके राज्य का विषय बनने के लिए)?

- यह साबित करने के लिए कि परमेश्वर वास्तव में आपका राजा है, आपको अपने जीवन में क्या परिवर्तन करने की आवश्यकता है?

अतिरिक्त चिंतन के लिए: यशायाह 43, भजन संहिता 44, 1 यूहन्ना 2:3-6, 1 यूहन्ना 2:15-17, प्रकाशितवाक्य 21।

दिन 18.

אִישִׁי - 'î·šî - ी सी– 'मेरा पति

हिब्रू में (î·šî) ी सी का अर्थ है मेरा पति।

होशे 2:16 और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय तू मुझे पति कहेगी और फिर बाली न कहेगी (एनआईवी)

यशायाह 54:5 क्योंकि तेरा कर्ता तेरा पति है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा है; और इस्राएल का पवित्र तेरा छुड़ानेवाला है, वह सारी पृथ्वी का भी परमेश्वर कहलाएगा।

परमेश्वर के प्रत्येक नाम का महान अर्थ है, और सबसेअधिक, वे बताते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ किस प्रकार की घनिष्ठता चाहते हैं। मनुष्यजाती द्वारा अब तक अनुभव किया गया सबसे घनिष्ठ रिश्ता विवाह है। परमेश्वर, हमारे सृष्टिकर्ता होने के नाते वास्तव में हमारे स्वर्गीय पिता है, लेकिन वह इस बात के लिए भी उत्सुक थे कि इस्राएल उसे अपना पति माने! होशे की किताब को 'दूसरी सबसे बड़ी प्रेम कहानी' माना जाता है। परमेश्वर ने गोमेर से विवाह करने के लिए होशे का उपयोग किया जो एक व्यभिचारी स्त्री बन गई और अंततः एक दासी बनी। परमेश्वर को यह अपेक्षा थी कि होशे उसके प्रति वफ़ादार रहेगा और जब उसे दासी के रूप में नीलाम किया जायेगा तो वह उसे बाज़ार से खरीद लेगा! इसे उद्धार कहते हैं. परमेश्वर वह पति है और इसराइल अविश्वासी, व्यभिचारी पत्नी थी। लेकिन परमेश्वर विश्वासी रहते है, भारी कीमत चुकाकर अपनी अलग हो चुकी पत्नी को छुड़ाता है, उसके अतीत को माफ कर देता है और उम्मीद करता है कि वह अपने बाकी दिनों तक उसके प्रति वफादार बनी रहे।

परमेश्वर ने इस्राएल को छुटकारा दिलाने के बाद, इस्राएल से अपेक्षा की कि वह उसे 'मेरे पति' 'î·šî' **ी सी** कह कर पुकारे, (होशे 2:16)

नए नियम में, यीशु को दूल्हे के रूप में और कलीसिया को उसकी दुल्हन के रूप में दर्शाया गया है। उनके दूसरे आगमन को 'मेम्ने का विवाह' कहा जाता है - विवाह की समाप्ति, जहां दुल्हन स्वर्ग में उनके घर में उनके साथ मिलती है।

जब एक पुरुष और स्त्री की सगाई होती है, तो वे उस व्यक्ति से जल्द ही शादी करने का प्रतिज्ञा/वादा करते हैं। वादा यह है कि वे एक-दूसरे के प्रति समर्पित रहेंगे और किसी अन्य

रिश्ते में शामिल नहीं होंगे। वे शादी के दिन का इंतजार करते हैं जहां वे हर मायने में एकजुट होंगे। इसी तरह, जब हम यीशु में अपना विश्वास रखते हैं और बपतिस्मा लेते हैं, तो हम अपनी प्रतिज्ञा/वादा "यीशु मेरे प्रभु हैं" को स्वीकार करते हैं। इस माध्यम से, हम यीशु से जुड़े हुए हैं और हम वादा कर रहे हैं कि हम अकेले यीशु के प्रति वफादार और समर्पित रहेंगे जब तक कि वह आकर हमें स्वर्ग में अपने घर नहीं ले जाता।

विचारक अंक:

- इस बात से आपको कैसा महसूस होता है की परमेश्वर ने आपको ऐसे घनिष्ठ रिश्ते के लिए बुलाया है जहाँ हम उसे "मेरा पति" कह सकते हैं!
- क्या यीशु आपको एक जीवनसाथी के रूप में वास्तव में उसके प्रति 100% प्रतिबद्धता, भक्ति, विश्वासयोग्यता और उसके प्रति प्रेम के साथ वफादार पाते हैं?
- **याकूब 4:4 में** ऐसा क्यों लिखता है “हे व्यभिचारिणियों*, क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? इसलिए जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।”
- क्या आप संसार के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं और यीशु के साथ अपने रिश्ते में व्यभिचारी हैं?
- अपने आप को संसार से पूरी तरह से अलग करने और खुद को यीशु के प्रति सम्पूर्ण भक्ति के साथ समर्पित होने के लिए आपको क्या करना होगा?

अतिरिक्त चिंतन के लिए: याकूब 4:1-10; 1 यूहन्ना 2:3-6; 1 यूहन्ना 3:1-3; 1 पतरस 2:11,12; मत्ती 22:34-40; यिर्मयाह 31:32.

दिन 19.

एल चय | אֵל חַי | 'एल खाह'-ई - जीवित परमेश्वर

इब्रानी में परमेश्वर के इस नाम "एल चय" का अर्थ है जीवित परमेश्वर

इब्रानी शब्द 'चय' का अर्थ है "जीवित", "जीवित", "हरा", "बहता हुआ", "ताज़ा", "जीवंत", या "सक्रिय"। इब्रानी शब्द चेय ('न) भी एक यहूदी प्रतीक है जो जीवन का प्रतिनिधित्व करता है और अक्सर गहनों पर पाया जाता है।

यह उपाधि इस्राएल के परमेश्वर को आसपास के देशों के झूठे देवी देवताओं से अलग करती है। मनुष्य के हाथों द्वारा बनाई गई लकड़ी और पत्थर की मूर्तियों के विपरीत, जीवित परमेश्वर स्वयं स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माता है। वही हमारे जीवन का स्रोत है।

इस नाम का उपयोग सभी मूर्तिपूजक और अन्य देवी देवताओं पर परमेश्वर की अद्वितीय प्रकृति और श्रेष्ठता पर जोर देने के लिए किया जाता है। (यिर्मयाह 10:1-16)

तो, इज़राइल के लिए, एल चय नाम वास्तव में उन्हें उनके परमेश्वर की अद्भुत श्रेष्ठता की याद दिलाता रहा।

भजन संहिता 84:2 मेरा प्राण यहोवा के आंगनों की अभिलाषा करते करते मूर्छित हो चला; मेरा तन मन दोनों जीवते परमेश्वर को पुकार रहे॥

यह वचन भजनकार की परमेश्वर की उपस्थिति के लिए हार्दिक लालसा और तीव्र भूख को व्यक्त करता है, यह दर्शाता है कि केवल एल चय (जीवित परमेश्वर) ही उसकी आत्मा की लालसा को संतुष्ट कर सकता है। "मेरा तन मन दोनों जीवते परमेश्वर को पुकार रहे" भजन यहाँ शरीर, मन और आत्मा को जोड़ते हुए परमेश्वर के प्रति समग्र लालसा और प्रेम को दर्शाता है।"

एल चय कोई दूर का या निर्जीव देवी देवता नहीं है जिसकी मूर्तिपूजक पूजा करते हैं, बल्कि वह जीवित और सक्रिय है। वह अपने लोगों के जीवन में अपनी उपस्थिति से लोगों का रूपांतरण करता है। उन मूर्तियों या झूठे देवी देवताओं के जैसा नहीं, एल चय जीवित, शाश्वत और प्रेमपूर्ण है, जो उसे आराधनापूर्ण एकमात्र परमेश्वर बनाता है।

भजनहार का जुनून हमें यह जांचने के लिए चुनौती देता है कि क्या हम भी ऐसे जुनून के साथ परमेश्वर की उपस्थिति के लिए भूखे हैं।

जीवित परमेश्वर हमारे लिए क्या करता है?
भजन संहिता 121:3
“वह तेरे पांव को फिसलने नहीं देगा, तेरा रक्षक कभी न ऊंघेगा; 4 सुन, इस्राएल का रक्षक, न ऊँघेगा और न सोएगा।”

भजनहार ने मूर्तियों का वर्णन इस प्रकार किया है, "उनके मुँह तो हैं, परन्तु बोल नहीं सकते, आँखें हैं, परन्तु देख नहीं सकतीं।" उनके कान तो हैं, परन्तु सुन नहीं सकते, नाक तो हैं, परन्तु सूँघ नहीं सकते, हाथ तो हैं, परन्तु महसूस नहीं कर सकते” (भजन 115)। जीवित परमेश्वर को जानना हमारे लिए कितना बड़ा आशीष है, जो इसके कहीं अधिक विपरीत से है? क्योंकि वह जीवित परमेश्वर है, उसके पास हर समय हममें से प्रत्येक को देखने की आंखें हैं, क्योंकि वह हमारे बारे में चिंतित है, वह बिना ऊंघे या निद्रा के हम पर नजर रखता है!

विचारक अंक:

- क्या आप उस जीवित परमेश्वर को जानना एक अविश्वसनीय आशीष और विशेषाधिकार मानते हैं जबकि लाखों लोग उससे अनजान हैं और बेजान मूर्तियों की पूजा करते हैं?
- क्या आप पहचान पाते हैं कि आप जीवित परमेश्वर की उपस्थिति में रह रहे हैं?

- यह जानकर आपको कैसा महसूस होता है कि जीवित परमेश्वर बिना सोए बिना ऊंघे आपको देख रहा है?
- आपके हृदय की अभिलाषा क्या है? क्या आपका हृदय जीवित परमेश्वर के साथ संवाद करने के लिए उत्सुक है? अपने जीवन के मूल्यों की प्राथमिकताओं के अनुक्रम के बारे में सोचें।
- आप प्रतिदिन परमेश्वर की खोज में जानबूझकर अपने पूरे अस्तित्व, अपने मन और अपने देह को कैसे लगा सकते हैं? (जैसे निरंतर प्रार्थना करना (1 थिस्स 5:16-18), दिन-रात वचनो पर ध्यान लगाना (भजन 1)

अतिरिक्त चिंतन के लिए:
यशायाह 46, यिर्मयाह 10, भजन संहिता 103, 2 राजा 19

दिन 20.
परमेश्वर मेरा शरणस्थान है [माचसे] और मेरा गढ़ है [मिसगैब]

भजन संहिता 62 परमेश्वर के प्रति भरोसे, पूर्ण विश्वास और समर्पण का एक गीत है, जिसे दाऊद ने अपने जीवन में बड़ी मुसीबत के समय लिखा था। कुछ लोग कहते हैं कि यह भजन तब लिखा गया था जब शाऊल दाऊद को मारने के लिए उसका पीछा कर रहा था और दाऊद को उससे भागना पड़ा और उससे छिपना पड़ा। दूसरों का कहना है कि यह भजन तब लिखा गया था जब दाऊद को अपने ही बेटे अबशालोम से भागना पड़ा था जिसने उसके पिता दाऊद से राज्य ले लिया था।

वह **"भजन संहिता 62:3,4"**
में लिखता है "तुम कब तक एक पुरुष पर धावा करते रहोगे, कि सब मिलकर उसका घात करो? वह तो झुकी हुई दीवार या गिरते हुए बाड़े के समान है। 4 सचमुच वे उसको, उसके ऊँचे पद से गिराने की सम्मति करते हैं; वे झूठ से प्रसन्न रहते हैं। मुँह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन में कोसते हैं।""

दाऊद अपने ऊपर वार और हमला महसूस कर रहा था । वह जानता था कि लोग उसे राजा के पद से हटाने की मंशा रखते हैं। वह लोगों का दोहरापन देख रहा था. वे बाहरी तौर पर आशीर्वाद दे रहे थे हैं लेकिन आंतरिक रूप से उसे शाप देते थे। वे उसके बारे में झूटी बातें फैला रहे हैं!

क्या ऐसा आपके जीवन से भी सम्बंधित है ? क्या आपको ऐसे अनुभव हुए हैं? आप उन्हें कैसे संभालते हैं? दाऊद ने इसे कैसे संभाला?
इन दर्दनाक, विचलित और अकेले समय में दाऊद ने परमेश्वर के बारे में ये वचन लिखे। वह हमें अपने जीवन को परमेश्वर की अटल शक्ति और सामर्थ में स्थापित करने के लिए आमंत्रित

करता है, जो अकेले ही सभी को सच्चा आराम और सुरक्षा प्रदान करता है क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है।

जब हम इस भजन को पढ़ते हैं तो हम दाऊद की गहरी मान्यताओं और घोषणाओं को देख सकते हैं कि उसके लिए परमेश्वर कौन है। परमेश्वर को एकमात्र ऐसे स्वरूप में प्रकट किया गया है जिसमें हम आत्मा के लिए आराम पा सकते हैं [वचन 1,5], हमारे शत्रुओं से हमारी रक्षा करने और उनसे हमे बचाने की शक्ति है [वचन 11] , और जिसके अटूट प्रेम में हम 100% निर्भर रह सकते हैं [वचन 12]

दाऊद के लिए, परमेश्वर उसकी चट्टान है [वचन 2, 6, 7], उसका उद्धार है [वचन 1,2,6], उसका गढ़ है [वचन 2,6], उसका शरणस्थान है [वचन 7, 8]

कुछ इब्रानी शब्द हैं जिनका उपयोग दाऊद करता है, माचसेह-इस शब्द का अर्थ है "आश्रय" या "शरण" [वचन 7,8], यह परमेश्वर के सुरक्षात्मक हृदय पर जोर देता है, यह दर्शाता है कि वह खतरे और परेशानी से एक सुरक्षित आश्रय प्रदान करता है।

मिसगैब - इस शब्द का अर्थ है "गढ़" [वचन 6], एक चट्टान [दुर्गम स्थान], एक आड़। यह एक किले या गढ़ को संदर्भित करता है, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर हमें शत्रुओं से दुर्गम स्थान पर रखकर हमारी रक्षा करेंगे!

तो, ये शब्द बताते हैं कि परमेश्वर सबसे सुरक्षित व्यक्ति और सुरक्षित स्थान है! हम उस पर निर्भर रह सकते हैं और हम ठीक रहेंगे। जब हम परमेश्वर की शरण लेते हैं, तो हम उन सभी चीजों के बीच सुरक्षित रह सकते हैं जो असुरक्षा का कारण बन सकती हैं। हम खतरों के बीच भी सुरक्षित रह सकते हैं. हम हर प्रकार के आक्रमण से सुरक्षित रह सकते हैं। परमेश्वर हमें हिलने नहीं देंगे, उनका उद्धार [रिहाई] सुनिश्चित है और परमेश्वर स्वयं हमारे शत्रुओं से हमारी रक्षा करने और शांति और सुरक्षा प्रदान करने के लिए एक किला बन जाएंगे।

जो बात हमें आश्चर्यचकित करती है वह यह है कि दाऊद जीवन-संकट की स्थिति के बीच में भी इतने विश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को व्यक्त करते हुए भजन गए रहा है।

विचारक अंक:

1. वर्तमान में आपकी चिंताएँ, भय और बोझ क्या हैं?
2. क्या आपको लगता है कि आपकी स्थिति में परमेश्वर आपके साथ है?
3. क्या आप देखते हैं कि परमेश्वर आप पर नजर रख रहा है और वह आपकी देखभाल करेगा?
4. क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर आपके शत्रुओं/समस्याओं से अधिक शक्तिशाली है?

5. दाऊद की तरह परमेश्वर को अपना शरणस्थान और गढ़ बनाने के लिए आपको क्या करना होगा?

अतिरिक्त चिंतन के लिए:
भजन संहिता 91, भजन संहिता 46, मत्ती 11:28-30, फिलिपिओं 4:6-9

चुनौती: परमेश्वर के लिए अपना स्वयं का भजन लिखें।

दिन 21.
याहवे शाफ़ाट - परमेश्वर हमारा न्यायी

शाफ़ाट "न्यायधीश" का हिब्रू शब्द है। पवित्र शास्त्र में हम परमेश्वर को कई भूमिकाएँ निभाते हुए देख पाते है , जिनमें से एक न्यायी की महत्वपूर्ण भूमिका है।

यशायाह 33:22 कहता है, "क्योंकि यहोवा हमारा न्यायी, यहोवा हमारा हाकिम, यहोवा हमारा राजा है; वही हमारा उद्धार करेगा।

जब भविष्यवक्ता यशायाह ने राष्ट्रों और लोगों की दुष्टता देखी, तो इससे वह विचलित हो गया। परमेश्वर ने अश्शूरियों द्वारा इस्राएल पर हमले की भविष्यवाणी करने के लिए यशायाह का उपयोग किया। और उसके साथ ही, उसी वक्त, परमेश्वर ने प्रकट किया कि वही परमेश्वर जो न्याय और विनाश लाता है, इस्राएल को पुनर्स्थापित भी करेगा। ये चीजें क्यों होती हैं? यशायाह उत्तर देता है: यहोवा हमारा न्यायी, हमें व्यवस्था देने वाला और हमारा राजा है। वही हमारा उद्धार करेगा! आज, हम याहवे शाफ़ाट - हमारे न्यायी परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

इस संसार में, लोग न्यायाधीशों से या तो डरते है या आशा की दृष्टि से देखते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे कानून के किस पक्ष में खड़े हैं। उनका दृष्टिकोण इस बात पर भी निर्भर करता है कि वे किस प्रकार के न्यायाधीश का सामना कर रहे हैं। यदि किसी ने कानून का उल्लंघन किया है, तो वे न्यायाधीश से डरते हैं; यदि उन्होंने कानून का पालन किया है, तो वे आशा के साथ न्यायाधीश के पास जाते हैं। सबसे बढ़कर न्यायाधीश का चरित्र मायने रखता है - भले ही वे न्यायी हों या अन्यायी।

भजन संहिता 94:2 में परमेश्वर को "पृथ्वी का न्यायी" बताया गया है।

वह सभी का न्यायाधीश है - न केवल हमारे कार्यों का मूल्यांकन करने में सक्षम है बल्कि हमारे हृदय के उद्देश्यों को समझने में भी सक्षम है। इब्रानियों 4:12 हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर "हृदय के विचारों और व्यवहारों का न्याय करता है।" जब हम अपने न्यायाधीश यहोवा शाफ़ाट से प्रार्थना करते हैं, तो हम उससे आग्रह करते हैं जिसकी धार्मिकता पूर्ण न्याय की मांग करती

है। फिर भी, इसी न्यायाधीश ने अपने पुत्र के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से हमें अपने अपराध से मुक्त होने का एक रास्ता प्रदान किया ।

परमेश्वर एकमात्र व्यवस्था देने वाला, न्यायी और राजा है जो अपने पापी शत्रुओं के पापों को अपने ऊपर लेकर और कीमत चुकाकर उन्हें उचित ठहराता है ताकि वे उसके राज्य और उसके अपने सन्तानो की प्रजा बन सकें।

सिर्फ इसलिए कि हम यीशु द्वारा हमारे पापों की कीमत चुकाई गयी और हम जीवित हैं, तो हम लापरवाही से अपना जीवन व्यतीत नहीं कर सकते या उनके बलिदान को हल्के में नहीं ले सकते।

इब्रानियों 4:13
"और सृष्टि की कोई वस्तु परमेश्वर से छिपी नहीं है वरन् जिसे हमें लेखा देना है, उसकी आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और प्रगट हैं।"

इब्रानियों 10:26-27
क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान-बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। 27 हाँ, दण्ड की एक भयानक उम्मीद और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा।"

तो, हमें कैसा जीवन जीना चाहिए?
2 कुरिन्थियों 5:9-10
“इस कारण हमारे मन की उमंग यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें पर हम उसे भाते रहें। 10 क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए।।"

जब हम यहोवा को अपना न्यायी स्वीकार करते हैं, हमें उसे प्रसन्न करने के लक्ष्य के साथ जीवन जीना चाहिए।

विचारक अंक
- क्या आप परमेश्वर को याहवे शाफ़ाट - हमारे न्यायी परमेश्वर के रूप में स्वीकारते हैं?
- क्या आप अपने विचारों, दृष्टिकोण, वाणी और कार्यों के प्रति सचेत हैं, यह याद रखते हुए कि परमेश्वर आपका न्यायी है?
- क्या आपने परमेश्वर को प्रसन्न करना अपना लक्ष्य बना लिया है?
- यदि आपका लक्ष्य उसे प्रसन्न करना है तो आप अपने दैनिक जीवन में क्या बदलाव लाएंगे?

अतिरिक्त चिंतन के लिए :
- 2 कुरिन्थियों 5
- इब्रानियों 10:26-39

• मत्ती 25.

दिन 22.

मिकवेह इस्राएल (מִקְוֵה יִשְׂרָאֵל) - इस्राएल की आशा

मिकवेह इस्राएल (מִקְוֵה יִשְׂרָאֵל) परमेश्वर का एक हिब्रू नाम है।

मिकवेह (מִקְוֵה) का अर्थ है "आशा," "उम्मीद," "विश्वास," और "उत्सुक अपेक्षा के साथ इंतजार करना या देखना।" मिकवेह इस्राएल का अनुवाद इस्राएल की उम्मीद के रूप में भी किया जा सकता है।

यह नाम अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की विश्वसनीयता और आशा के स्रोत के रूप में उनकी उपस्थिति पर जोर देता है। यह विश्वासियों के लिए एक शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि परमेश्वर उनकी अंतिम आशा और आश्रय हैं।

विस्तृत सहमति (स्ट्रॉन्स कॉनकॉर्डेंस) के अनुसार, हिब्रू बाइबिल (ओल्ड टेस्टामेंट) में मिकवे का 11 बार उपयोग किया गया है। उदाहरण के लिए:

यिर्मयाह 17:13 *हे यहोवा, तू इस्राएल की (मिकवेः इस्राएल) आशा है;*
जितने तुझे छोड देते हैं वे सब लज्जित होंगे; जो तुझ से भटक जाते हैं उनके नाम भूमि ही पर लिखे जाएंगे, क्योंकि उन्होंने बहते जल के सोते यहोवा को त्याग दिया है।

यह वचन हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर ही हमारी अंतिम आशा है, और उससे दूर होने से निराशा होती है।
जब परमेश्वर हमारी आशा है, तो हम अपने उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता के रूप में उस पर भरोसा करते हैं - क्योंकि वह वही है! हम हमेशा उसके पास जा सकते हैं:

- मुक्ति
- उद्धार
- सुरक्षा
- प्रावधान
- मार्गदर्शन

पवित्रशास्त्र की आशा परमेश्वर के स्वभाव में अपना आधार पाती है: उसका प्रेम, विश्वासयोग्यता, भलाई, दया और शक्ति।

जैसा कि **भजन संहिता 42:5** प्रोत्साहित करता है:
"हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? और तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह; क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा। "

हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन मिकवेह इस्राएल हमारी आशा है:
- हमें उनकी उपस्थिति में ताकत मिलती है।
- हमें उनके विश्वसनीय होने पर भरोसा है।
- हम उनके उद्धार और मुक्ति की प्रतीक्षा करते हैं।

आशा मसीही को उन अविश्वासियों से अलग करती है जिनके पास कोई आशा नहीं है (1 थिस्सलुनीकियों 4:13)। मसीही होने के नाते, हम यीशु के नाम पर अपनी आशा रखते हैं, उनके दूसरे आगमन और हमारे पुनरुत्थान का बेसब्री से इंतजार करते हैं।

विचारक

1. क्या आप सदैव परमेश्वर पर आशा रख सकते हैं?

2. यदि नहीं, तो क्या आप उसे जानने के लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार हैं ताकि आप उस पर पूरी आशा रख सकें?

3. वोह कौन सी बात है जो आपकी मदद कर सकती है के आप परमेश्वर को इस तरह जाने कि आप यह घोषणा कर सकें, "मेरी आशा उस पर है"?

4. क्या कोई और चीज़ है जिस पर आप अपनी आशा रख रहे हैं - जैसे अपने आप पर, संसार, धन, या धार्मिकता? आप इस मानसिकता से कैसे दूर जा सकते हैं?

प्रार्थना -

रोमियों 15:13
"परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।।

अतिरिक्त चिंतन के लिए:
- भजन संहिता 62:5
- भजन संहिता 119:114
- मत्ती 12:21
- प्रेरितो के कार्य 24:15
- 1 थिस्सलुनिकियों 1:3.

दिन 23.
अद्भुत परामर्शदाता - "पेले योवेस"

यशायाह के पुस्तक अध्याय 9 में, यशायाह यहूदा से बात करता है, जो अश्शूरियों से डर रहा था और अपने उत्पीड़कों से शक्तिहीन महसूस कर रहा था , ,और अनिश्चित था कि परमेश्वर उनके पक्ष में है या नहीं। यशायाह यहूदा को संबोधित करते हुए, यीशु के जीवन और सेवकाई के अधिकांश भाग को 700 वर्ष पहले भविष्यसूचक रूप से देखते हैं।

यशायाह 9:6
क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी*, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।

यह भविष्यवाणी यीशु मसीह के एक शिशु के रूप में जन्म और उनके अद्‌भुत उपदेशक कहे जाने से संबंधित है। वह अद्‌भुत और आदर्श उपदेशक दोनों ही हैं।

अद्‌भुत:
यीशु मसीह अपने जन्म, जीवन, शिक्षा, चमत्कार, प्रेम और कष्ट, मृत्यु और पुनरुत्थान, आरोहण, अपमान और उत्कर्ष, क्रूस और मुकुट, अनुग्रह और महिमा में अद्‌भुत हैं। यद्यपि वह परमेश्वर होते हुए भी, देह के रूप में एक असाधारण कुंवारी से जन्मे और एक बहुत ही सामान्य जीवन के माध्यम से अपनी मानवता में अद्‌भुत ठहरे। ब्रह्माण्ड का रचयिता होते हुए भी वह अपनी विनम्रता में अद्‌भुत है।

फिलिप्पियों 2:5-8
जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो;
6जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। 7 वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया*, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। 8 और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

यीशु अद्‌भुत हैं हमें नर्क से बचाने के लिए क्रूस पर अपने प्राणो की बलि देकर। वह हमारे प्रति अपने अद्‌भुत और अतुलनीय प्रेम में अद्‌भुत हैं। वह राजाओं का राजा होने में ,न्यायाधीश, वह जो हमें स्वर्ग में ले जाता है, वह जो परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठता है, वह अद्‌भुत है ।

2. परामर्शदाता:
यीशु हर तरह से परिपूर्ण हैं क्योंकि वह परमेश्वर हैं। वह परमेश्वर की संपूर्ण सलाह को जानता है, इसलिए वह अपने लोगों के लिए उनके सभी संदेहों और कठिनाइयों में, सभी युगों और राष्ट्रों में, हर समय एक आदर्श परामर्शदाता है, और किसी भी स्थिति में हमारा अचूक और परिपूर्ण मार्गदर्शक बनने में सक्षम है। हमारी आत्मा को संतुष्ट करने के लिए उसके पास कभी भी उत्तर की कमी नहीं होती। वह अपने शिष्यों के भीतर, सिखाने, याद दिलाने और सलाह देने के लिए पवित्र आत्मा के रूप में वास करता है ।

यूहन्ना 14:26
परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।"

यूहन्ना 16:13-15
परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। 14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। 15 जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैंने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

विचारक अंक:
1. निम्न बातो को लिखे कि यीशु विभिन्न पहलुओं में कितने अद्भुत हैं। उन पर ध्यान करें और उन पहलुओं के लिए परमेश्वर की स्तुति करें।
2. ज्ञान के लिए पवित्र आत्मा पर भरोसा करें या आज आप जिस परिस्तिथि का सामना करें उसमें उसकी सलाह लें।
3. हर कदम पर पवित्र आत्मा की सलाह के अनुसार जीने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित करें।

अतिरिक्त चिंतन के लिए:
• भजन संहिता 32:8; भजन संहिता 33:11; भजन संहिता 19:21; भजन संहिता 16:7; नीतिवचन 2:6-7; नीतिवचन 9:6; याकूब 1:5

दिन 24.
यहोवा सिदकेनु (त्सिदकेनु) - परमेश्वर हमारी धार्मिकता।

जैसे ही हम परमेश्वर के चरित्र पर ध्यान करते हैं, हमें उनके खूबसूरत नाम की याद आती है: याहवेह सिदकेनु, परमेश्वर हमारी धार्मिकता।
• यहोवा परमेश्वर के वाचा का नाम है।
• सिदकेनु का अर्थ है हमारी धार्मिकता, यह दर्शाता है कि परमेश्वर हमें अपने साथ सही बनाता है।

इब्रानी के यह वाक्यांश याहवे सिदकेनु **यिर्मयाह 23:6** में देखा जाता है:
"उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे और यहोवा उसका नाम "यहोवा हमारी धार्मिकता" रखेगा। "

यहाँ पर वचन, मसीहा को संदर्भित करता है, जिसके बारे में भविष्यवाणी की गई थी कि वह दाऊद की एक धर्मी कुल के रूप में आएगा।

यिर्मयाह के समय में, यहूदा के शासक अक्सर धार्मिकता को बनाए रखने में विफल रहे। यहूदा के अंतिम शासक राजा सिदकिय्याह ने "परमेश्वर की दृष्टि में बुरा किया" (2 राजा 24:19)। विडंबना यह है कि सिदकिय्याह के नाम का अर्थ है "यहोवा मेरी धार्मिकता है," लेकिन वह इसके अनुसार जीने में विफल रहा। राज्य के भ्रष्टाचार के बीच, यिर्मयाह ने मसीहा के आने की भविष्यवाणी की - एक शासक जो सभी के लिए सच्ची धार्मिकता लाएगा। इस भविष्यवाणी ने अविश्वसनीय आशा प्रदान की!

परमेश्वर ने इस्राएल को अपने राज्य के रूप में स्थापित किया था, स्वयं उनके धर्मी राजा के रूप में। यह पृथ्वी पर एकमात्र ऐसा राज्य था जिस पर सीधे तौर पर परमेश्वर का शासन था। यह कितने सौभाग्य की बात है ! फिर भी, लोगों ने उसे अस्वीकार कर दिया और उन पर शासन करने के लिए एक मनुष्य की राजा के रूप में मांग की।

1 शमूएल 8 : 6-7
परन्तु जो बात उन्होंने कही, 'हम पर न्याय करने के लिये हमारे ऊपर राजा नियुक्त कर दे,' यह बात शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। 7 और यहोवा ने शमूएल से कहा, "वे लोग जो कुछ तुझ से कहें उसे मान ले; क्योंकि उन्होंने तुझको नहीं परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है, कि मैं उनका राजा न रहूँ।*

1 शमूएल 8 में, परमेश्वर ने उन्हें राजा के रूप में अस्वीकार करने और मानवीय शासकों को चुनने के परिणामों के बारे में चेतावनी दी। उन्होंने स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी की थी कि मानवीय राजा उनके साथ कैसा दुर्व्यवहार करेंगे और उनके प्रति अंतिम चेतावनी जारी की:

1 शमूएल 8 : 18
और उस दिन तुम अपने उस चुने हुए राजा के कारण दुहाई दोगे, परन्तु यहोवा उस समय तुम्हारी न सुनेगा।"

फिर भी, अपनी दया में, परमेश्वर ने मसीहा के, जो एक संपन्न राजा है उसका वादा किया जो उनका यहोवा सिदकेनु - हमारी धार्मिकता का परमेश्वर बनेगा।

मनुष्य जाति की खोई हुई धार्मिकता

जब अदन की वाटिका में पाप ने संसार में प्रवेश किया तो मानवता ने धार्मिकता खो दी। परमेश्वर ने इस्राएल को अपने राज्य के रूप में स्थापित करके, उन्हें अपनी व्यवस्था देकर और उनके राजा के रूप में शासन करके इसे पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया। लेकिन लोगों ने इन आशीष को अस्वीकार कर दिया, और इसके बदले मांग की:

19 और कहने लगे, "नहीं! हम निश्चय अपने लिये राजा चाहते हैं, 20 जिससे हम भी और सब जातियों के समान हो जाएँ, और हमारा राजा हमारा न्याय करे, और हमारे आगे-आगे चलकर हमारी ओर से युद्ध किया करे।"—**1 शमूएल 8:19 ब- 20**

परमेश्वर द्वारा उन्हें दी गई विशेष पहचान को अपनाने के बजाय, उन्होंने अन्य राष्ट्रों की तरह बनने पर जोर दिया। वे चाहते थे कि एक ऐसा राजा हो जो उनका न्याय करे, उनका नेतृत्व करे और उनकी लड़ाई लड़े - विडंबना यह है कि उन्होंने उस एकमात्र राजा को अस्वीकार कर दिया जो वास्तव में उन भूमिकाओं को पूरा कर सकता था। इस अस्वीकृति और अराजकता के बीच, परमेश्वर ने धर्मी राजा के रूप में आने का वादा किया, जो मसीहा के माध्यम से पुनःस्थापन और मुक्ति लाएगा।

यीशु: अधर्म का उपाय

प्रभु हमारी अधर्मता का समाधान प्रदान करते हैं:

रोमियों 3:21-22 अ

पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं, 22 अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है।

अधर्म से प्रभावित समस्त मानवजाति के लिए यीशु में संपूर्ण इलाज उपलब्ध है। हालाँकि, कई लोग इसका इलाज ढूंढने में असफल हो जाते हैं क्योंकि उन्हें एहसास नहीं होता कि वे आत्मिक रूप से "बीमार" हैं।

विचारक अंक

1. क्या आप मानते हैं कि आप स्वयं धार्मिकता प्राप्त नहीं कर सकते हैं और यीशु मसीह अपनी वह धार्मिकता प्रदान करते हैं जिसके द्वारा आप परमेश्वर की दृष्टि में परिपूर्ण हो जाते हैं?
2. क्या आप "पहले उसके राज्य और धार्मिकता की खोज कर रहे हैं"? (मत्ती 6:33)
3. आप "प्रभु यीशु मसीह को कैसे पहिन सकते हैं"? (रोमियों 13:11-14)

अतिरिक्त चिंतन के लिए • 1 पतरस 3:12, रोमियों 6, गलातियों 2:15-21, 2 पतरस 1:3-11.

दिन 25.

एल एलीओन אֵל עֶלְיוֹן - परमप्रधान परमेश्वर

एल एलीओन - परमप्रधान परमेश्वर।

• एल का अर्थ है परमेश्वर, और एलीओन का अर्थ है परमप्रधान।

• वाक्यांश "परमप्रधान परमेश्वर" या "सर्वोच्च परमेश्वर" का उल्लेख वचनो में 28 बार किया गया है ।

एल एलीओन यह नाम दर्शाता है कि किसी भी मूर्ति या सृजित प्राणी की पूजा नहीं की जानी चाहिए या उसे परमेश्वर से ऊपर नहीं उठाया जाना चाहिए क्योंकि वह हर तरह से श्रेष्ठ है।

यह नाम हमें सिखाता है कि परमेश्वर एक सच्चा, सबसे शक्तिशाली परमेश्वर है। यह वह परमेश्वर है जो समुद्र को विभाजित करता है, तूफान को शांत करता है, बीमारों को चंगा करता है, मृतकों को जिलाता है, और हमारी आराधना और पूर्ण समर्पण के योग्य है।

सदोम और गमोरा पर हमला करने वाले राजाओं को हराने के बाद, अब्राहम की मुलाकात सलेम के राजा मेल्कीसेदेक से हुई। परमप्रधान परमेश्वर के एक पुजारी मलिकिसिदक ने अब्राहम को आशीर्वाद दिया और अब्राहम को शत्रुओं से छुड़ाने के लिए एल एलीओन की प्रशंसा की। उस आशीष में पहली बार परमेश्वर को "एल एलीओन" कह कर पुकारा गया:

उत्पत्ति 14:20
“और धन्य है परमप्रधान परमेश्वर,
जिसने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है।"

एल एलीओन के प्रमुख विशेषताएं

1. **प्रधानता**
   एल एलीओन परमेश्वर की प्रधानता, सर्वोच्च अधिकार और समस्त सृष्टि पर प्रभुत्व पर जोर देते हैं। वह परम शासक है, और उसकी शक्ति पूर्ण है.
2. **सर्वोत्तमता**
   यह नाम इस बात पर प्रकाश डालता है कि परमेश्वर मानवीय समझ और नियंत्रण से परे है। वह हमारी कल्पना से कहीं अधिक महान है।
3. **सर्वशक्तिमान**
   एल एलीओन परमेश्वर की अपार शक्ति और उसके उद्देश्यों को पूरा करने की क्षमता के बारे में बात करते हैं। वह सभी शक्ति का स्रोत है और सारी सृष्टि का पालन-पोषण करता है।

पवित्रशास्त्र के संदर्भ

• **भजन संहिता 57:2** "मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकारूँगा, परमेश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध करता है।।"

• **भजन संहिता 78:35:** भजनहार ने परमेश्वर को एल एलीओन के रूप में संदर्भित किया है, उनकी सर्वोच्च शक्ति और प्रधानता पर जोर देते हुए।

• **भजन संहिता 97:9:** "क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है; तू सारे देवताओं से अधिक महान ठहरा है।"

विचारक अंक:

1. **विस्मय और आश्चर्य**
   आप परमेश्वर की शक्ति और ज्ञान के प्रति विस्मय और आश्चर्य की गहरी भावना को कैसे विकसित कर सकते हैं क्योंकि वह एल एलीओन, सर्वोच्च परमेश्वर है?
   सुझाव: परमेश्वर के शक्तिशाली चमत्कारों का अध्ययन करें और उन पर मनन करें।
2. **परीक्षाएं और प्रलोभन**
   यह तथ्य किस प्रकार से आपकी मदद करता है की परमप्रधान परमेश्वर आपके साथ है, और वह आपके जीवन के परीक्षाओं और प्रलोभनों का जवाब देने में सहायता करता है?
3. **प्रधानता के प्रति समर्पण**
   आपके जीवन के सभी क्षेत्रों में परमेश्वर के प्रधानता के प्रति समर्पित होने के व्यावहारिक तरीके क्या हैं?
4. **एल एलीओन का परिचय**
   आप एल एलीओन, परमप्रधान परमेश्वर का परिचय उन अन्य लोगों से कैसे कराएँगे जो उसे नहीं जानते हैं?

अतिरिक्त चिंतन के लिए:

- भजन संहिता 92
- भजन संहिता 47
- 2 शमूएल 22

दिन 26.
यहोवा स(ह)अम्मा: परमेश्वर वहाँ है।

यह परमेश्वर का नाम नहीं है, बल्कि परमेश्वर के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बात है। एक समय था जब यहूदा के लोग दुष्ट हो गये थे। जब वे मिस्र से वाचा की भूमि की ओर जा रहे थे तो परमेश्वर ने उन्हें एक गंभीर चेतावनी दी थी। हमने इसे व्यवस्थाविवरण के अध्याय 8 में पढ़ा।

आइए उस चेतावनी का निष्कर्ष पढ़ें।

व्यवस्थाविवरण 8:19,20 *यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लेगा, और उनकी उपासना और उनको दण्डवत् करेगा, तो मैं आज तुमको चिता देता हूँ कि तुम निःसन्देह नष्ट हो जाओगे। 20 जिन जातियों को यहोवा तुम्हारे सम्मुख से नष्ट करने पर है, उन्हीं के समान तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा का वचन न मानने के कारण नष्ट हो जाओगे।*

कई चेतावनियाँ देने के बाद, जब लोगों ने पश्चाताप नहीं किया, तो परमेश्वर ने इस चेतावनी को पूरा करने के लिए बेबीलोनियों का उपयोग किया। बेबीलोनियों ने आकर यहूदा और यरूशलेम में बहुतों को मार डाला, और बहुतों को दास बना लिया। उन्होंने यरूशलेम के भवन को नष्ट

कर दिया। यरूशलेम के अंतिम विनाश के दौरान भविष्यवक्ता यहेजकेल बेबीलोन में थे। परमेश्वर ने उसे भवन और यरूशलेम से परमेश्वर के चले जाने का दर्शन दिया। हम इसे अध्याय 9 और 10 में पढ़ते हैं

यहेजकेल 10:18
यहोवा का तेज भवन की डेवढ़ी पर से उठकर करूबों के ऊपर ठहर गया।

यह परमेश्वर के लिए बहुत दुखदायी घटना थी! जब से परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से निकाला तब से वह उनके साथ था। मिस्र से वाचा की भूमि तक उनकी यात्रा के सभी दिनों में उनकी उपस्थिति दिन के दौरान बादल के खम्भे के रूप में और रात में आग के खम्भे के रूप में दिखाई देती थी (निर्गमन 13:21)। उनकी उपस्थिति तम्बू (परमेशर का निवास) में थी। सुलैमान के शासनकाल के दौरान, यरूशलेम में मंदिर बनाया गया था, और परमेश्वर की महिमा भवन में भर गई थी (1 राजाओं 8:11)।

उसी भविष्यवक्ता यहेजकेल के माध्यम से, परमेश्वर ने भवन को पुनर्स्थापित करने और यरूशलेम में अपने पुनः प्रवेश की अपनी योजना का खुलासा किया। यहेजकेल की पुस्तक के अंतिम नौ अध्याय (अध्याय 40-48) भविष्य के भवन की दृष्टि पर आधारित है। भवन और शहर के सभी विस्तृत आयामों का उल्लेख करने के बाद, यहेजकेल ने इस कथन के साथ पुस्तक समाप्त की: यहेजकेल 48:35 नगर के चारों ओर का घेरा अठारह हजार बाँस का हो, और उस दिन से आगे को नगर का नाम 'यहोवा शाम्मा' रहेगा।" (यहोवा स(ह)अम्मा) परमेश्वर वहां है ।

क्या आप इस वाक्यांश 'यहोवा शम्मा' - 'परमेश्वर वहाँ है' का महत्व देख पा रहे है ? इससे परमेश्वर की अपने प्रिय लोगों, अपनी प्रिय दुल्हन के साथ उपस्थिति दर्ज कराने की योजना का पता चलता है। यहां तक कि दूसरा भवन भी रोमियों द्वारा 70 वी (ईसा पश्चात्) में नष्ट कर दिया गया था। यीशु ने ***यूहन्ना 2:19*** *में अपने देह को मंदिर के रूप में संदर्भित किया था यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "इस मंदिर को डाह दो, और मैं इसे 3 दिनों में फिर से खड़ा करूंगा।"*

तो, हम कह सकते हैं कि 'परमेश्वर वहाँ हैं' जब यीशु शारीरिक रूप से यरूशलेम और यहूदा में मौजूद थे! लेकिन हम जानते हैं कि उसे हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरना पड़ा, पुनर्जीवित होना पड़ा और स्वर्ग जाना पड़ा। वह अंत नहीं था. उसने हमें नहीं छोड़ा! यीशु ने **यूहन्ना 14:23** में वादा किया था यीशु ने उत्तर दिया, *"यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास करेंगे।"*

तब यीशु ने पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा की: **यूहन्ना 14:25,26**

"ये बातें मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही। 26 परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।"

आज, यदि आप बपतिस्मा प्राप्त मसीह हैं, तो आप अपने शरीर को देख सकते हैं और कह सकते हैं 'याहवे शम्मा' - 'परमेशर वहाँ हैं'! आपका शरीर परमेश्वर का भवन है क्योंकि ईश्वर इसमें आत्मा के रूप में निवास करता है।

प्रेरित पौलुस ने 1 कुरंथिओं 6:19-20 में लिखा, "19 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है*; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? 20 क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।"

विचारक अंक:

- क्या आप अपने शरीर को परमेश्वर के भवन के रूप में मानते हैं? क्या आप देह से परमेश्वर का आदर कर रहे हैं?
- क्या आप कलीसिया को परमेश्वर के भवन के रूप में स्वीकारते हैं? (1 कुरिन्थिओं 3:16,17) आप कलीसिया के साथ कैसा व्यवहार करते हैं?
- आप चाहे जहां भी हैं, क्या अपने साथ परमेश्वर की उपस्थिति को स्वीकारते हैं? क्या आपके विचार, उद्देश्य, शब्द और लोगों के साथ बातचीत आपकी जागरूकता पर केंद्रित है कि 'याहवे शम्मा' - 'परमेश्वर वहां हैं' आपके साथ हैं?

अतिरिक्त चिंतन के लिए :

व्यवस्थाविवरण 31:6, भजन 16, भजन 139:7, मत्ती 28:30

दिन 27.
मायेन मीम हियिम - जीवित जल का सोता ।

यिर्मयाह 2:13 क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयाँ की हैं*: उन्होंने मुझ जीवन के जल के सोते को त्याग दिया है, और, उन्होंने हौद बना लिए, वरन् ऐसे हौद जो टूट गए हैं, और जिनमें जल नहीं रह सकता।

यहाँ परमेश्वर ने स्वयं को "जीवित जल का सोता " घोषित किया है, और हमारे आत्मिक जीवन के अंतिम स्रोत के रूप में अपनी भूमिका पर जोर दिया है।

जल के बिना किसी भी प्रकार का जीवन अस्तित्व में नहीं रह सकता। आज वैज्ञानिक जानते हैं कि पृथ्वी एक दिन नष्ट हो जायेगी। वे ऐसे ग्रह को खोजने के लिए हजारों करोड़ रुपये खर्च कर रहे हैं जहां पानी मौजूद हो ताकि मनुष्य दूसरा घर ढूंढ सके!

जिस प्रकार जीवन के अस्तित्व के लिए पानी की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार यह जीवन को तरोताजा भी करता है। इज़राइल में जहां वर्षा दुर्लभ थी, वे सोते पर निर्भर थे और जहां कोई सोता नहीं था, उन्हें बारिश के पानी को इकट्ठा करने और रखने के लिए चट्टानों पर कुंड खोदने पड़ते थे। पानी बहुत कीमती था. नदियों और झरनों को जीवित जल माना जाता है। कुंडों में एकत्रित पानी बासी या सूख सकता है! आशा है कि आप समझ गए होंगे कि परमेश्वर स्वयं को जीवन के जल का सोता क्यों कहता है। वह सभी जीवित प्राणियों के लिए जीवन और ताज़गी का एकमात्र शाश्वत स्रोत है।

यीशु ने **यूहन्ना 4:14** में इस सत्य की पुष्टि करते हुए यह वादा किया कि जो लोग उससे पीते हैं वे फिर कभी प्यासे नहीं होंगे।

यीशु हमारी गहरी आध्यात्मिक लालसाओं को शांत करते हुए, हमारे लिए जीवित जल का अनंत सोता बन गए।
जैसे पानी हमारे शरीर को पुनर्जीवित करता है, वैसे ही यीशु हमारी आत्माओं को पुनर्जीवित करते हैं। उसके बिना, हम थके हुए, झुलसे और सूखे हैं। लेकिन उसके साथ, हम जीवित जल से भर जाते हैं, जो हमारी आत्माओं को पोषण देता है।

परमेश्वर चाहते है कि हम 'टूटे हुए कुंडों' में जाने के बजाय अपनी आत्मा का पोषण करने के लिए उसके पास जाएँ। यशायाह ने टूटे हुए हौदों से झूठे देवताओं या मूर्तियों का उल्लेख किया। आज, हम जो टूटे हुए कुंड खोदते हैं, वे अस्थायी समाधान हैं जिन पर हम अपने पोषण के लिए निर्भर करते हैं, जैसे कि मानवीय रिश्ते, भौतिक संपत्ति, आत्म-धार्मिकता, पदार्थों की लत और सांसारिक सुख। जब हम इन पर निर्भर होते हैं, तब भी हम खाली, असंतुष्ट, टूटा हुआ और प्यासा महसूस करते हैं।

यीशु ने पवित्र आत्मा को जीवित जल कहा।

यूहन्ना 7:37-39 *फिर पर्व के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकारकर कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। (यशा. 55:1) 38 जो मुझ पर विश्वास करेगा*, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी'।" 39 उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था।*

यीशु ने यह बात झोपड़ियों (सुक्कोथ) के पर्व के दौरान कही थी। उस दावत के दौरान एक परंपरा थी. प्रति दिन भोर को याजक सिलोआम के कुण्ड से सोने के कलश में ताजा जल भरेगा, और बड़े जुलूस के साथ उस जल को वेदी पर लाएगा, और उसे उण्डेल देगा। उसी समय, एक अन्य पुजारी दाखरस भेंट के रूप में बेल का एक कलश पेश करेगा। यही वह समय है जब यीशु ने यह दावा किया था, "जो कोई प्यासा हो वह मेरे पास आए और पीए।" उन्होंने वादा किया कि "जीवित जल की नदियाँ भीतर से बहेंगी

हमने देखा कि पिता यहोवा ने दावा किया था कि वह 'जीवित जल का सोता' है। पुत्र यीशु ने वादा किया कि जो लोग उससे पीते हैं वे फिर कभी प्यासे नहीं होंगे। पवित्र आत्मा वह है जिसका वादा यीशु ने 'जीवित जल की नदियाँ' के रूप में किया था जो विश्वासियों के भीतर से बहेंगी। इन शब्दों के माध्यम से, हम पाते हैं कि त्रिदेव हमारे भीतर 'जीवित जल के सोते' के रूप में काम कर रही है।

विचारक अंक:

- क्या आप परमेश्वर को जीवित जल का सोता मानते हैं?
- क्या वह आपके जीवन को बनाए रखने और इसे "पूर्ण जीवन" जीने के तक विकसित करने के लिए पर्याप्त है?
- क्या कोई टूटा हुआ कुंड है जिसे आप खोद रहे हैं? (परमेश्वर के अलावा कुछ भी जहां आप संतुष्टि पाने या अपने जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं)
- ऐसे टूटे हुए कुंडों को आज ही से इंकार करें और त्यागें।

अतिरिक्त चिंतन के लिए:

• यूहन्ना 4:1-26; यिर्मयाह 17:13; प्रकाशितवाक्य 7:13-17; प्रकाशितवाक्य 22:1,2

दिन 28.
גֹּאֲלִי gō·'ă·lî- गो·'अ·लीî - मेरा मुक्तिदाता ।

पवित्रशास्त्र में, कई लोग परमेश्वर को हिब्रू में "उद्धारक" या "हैग्गो'एल" कहते हैं। भजनों और भविष्यवक्ताओं में, परमेश्वर को इस्राएल के मुक्तिदाता के रूप में वर्णित किया गया है जो अपने दुश्मनों के खिलाफ खड़ा होगा और उन्हें बचाएगा।

यह नाम स्वजन मुक्तिदाता की सिद्धान्त में निहित है। यह परिवार के एक सदस्य द्वारा निभाई गई भूमिका है जो अपने रिश्तेदारों को परेशानी या कर्ज से बचाएगा।

लयव्यवस्था अध्याय 25 में, हम उदाहरण देखते हैं कि कैसे एक स्वजन मुक्तिदाता गरीबी के कारण बेचे गए रिश्तेदार के खेत को दोबारा खरीदेगा, एक इस्राएली दास को मुक्त करेगा जिसने गरीबी के समय में खुद को बेच दिया था, और एक मारे गए रिश्तेदार के खून का बदला लेगा।

इस वर्णन के साथ परिवार की भावना जुड़ी हुई है। यह तब होता है जब आप गलती करके गहरे संकट में होते हैं और चाहते हैं कि कोई आपको बचा ले; तभी एक उद्धारक, एक रिश्तेदार आपका कर्ज चुकाता है और आपको छुटकारा दिलाता है। यह अनुग्रह का कर्म है. छुटकारे का ये कार्य मुक्तिदाता रिश्तेदार के प्रेम और निष्ठा को प्रदर्शित करते हैं।

व्यवस्था के लिखे जाने से बहुत पहले, अय्यूब को अपने मुक्तिदाता के बारे में पता था! जब उसके सब मित्र उस पर दोष लगा रहे थे, तब अय्यूब ने समझा, कि उसका छुड़ानेवाला उसे निर्दोष ठहराएगा। साथ ही, वह अपने उद्धारक को देखने की लालसा भी व्यक्त करता है। वह जिस मुक्तिदाता की अपेक्षा कर रहा था वह स्वयं परमेश्वर था।

अय्यूब 19:25
मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा।

मोचन शब्द का अर्थ है "कीमत के साथ वापस खरीदना"। मोचन का अर्थ वह चीज़ खरीदना नहीं है जो किसी और की है। यह उस चीज़ को वापस खरीदने की प्रक्रिया है जो आपकी थी लेकिन खो गई थी या जो चीज़ आपसे छीन ली गई थी। संपूर्ण पवित्रशास्त्र मुक्ति के बारे में है। दूसरे शब्दों में, पवित्रशास्त्र मुक्तिदाता के कार्य को प्रकट करती है। मनुष्यजाति परमेश्वर की थी; उसने उन्हें बनाया! परन्तु मनुष्यजाति ने स्वयं को पाप के हाथों बेच दिया। क्योंकि परमेश्वर सबसे अच्छा उद्धारकर्ता है, वह मानवजाति को छुटकारा दिलाने और उन्हें बहाल करने के लिए भारी कीमत चुकाता है

1 पतरस 1:18,19
क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो पूर्वजों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, 19 पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।

यीशु ने हमें हमारे पापों से छुटकारा दिलाने के लिए क्रूस पर अपना लहू बहाया। वह हमारा हैग्गो'एल है, हमारा मुक्तिदाता है क्योंकि उसने हमें पाप की गुलामी से खरीदने के लिए फिरौती दी है। उन्होंने परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता पुनर्स्थापित किया, हम परमेश्वर की संतान बने। यह वास्तव में कार्य में अनुग्रह है।

सचमुच हमारा मुक्तिदाता जीवित है और हमें उसमें अपना विश्वास और सुरक्षा खोजने की आवश्यकता है। हमें कभी भी ऐसी किसी चीज़ की अनुमति नहीं देनी चाहिए जो हमें उस गुलामी में वापस ले जाए जिससे परमेश्वर के मेमने ने हमें छुड़ाया था।

रोमियों 6:11-14 ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।12 इसलिए पाप तुम्हारे नाशवान शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो। 13 और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो,

और अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो। 14 तब तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो।

विचारक अंक:

- परमेश्वर आपका मुक्तिदाता है, आपके लिए इसके क्या मायने है ?
- यीशु मसीह के द्वारा मुक्ति ने आपके जीवन को कैसे प्रभावित किया है?
- आप धार्मिकता के साधन के रूप में अपना हर अंग उसे कैसे अर्पित कर सकते हैं?

अतिरिक्त चिंतन के लिए:

• रोमियों 5 व् 6 ; तीतुस 2:11-15, यशाह 44

दिन 29.

अब्बा-पिता

भजन संहिता 89:26 वह मुझे पुकार के कहेगा, कि तू मेरा पिता है, मेरा ईश्वर और मेरे बचने की चट्टान है।"

यह भजन इस कथन से शुरू होता है: "मैं प्रभु के महान प्रेम का गीत सदैव गाता रहूंगा"। फिर यह इस बारे में बात करता है कि कैसे परमेश्वर ने दाऊद को राजा बनाया और दाऊद परमेश्वर को यह कहते हुए पुकारेगा कि "आप मेरे पिता, मेरे परमेश्वर, मेरी चट्टान मेरे उद्धारकर्ता हैं"। हम जानते हैं कि दाऊद का परमेश्वर के साथ अविश्वसनीय रूप से घनिष्ठ संबंध था।

यह विचार, कि परमेश्वर हमारे पिता हो सकते है, पवित्रशास्त्र में सबसे महत्वपूर्ण सत्यों में से एक है। अन्य सभी धर्म अपने देवताओं को दूर के प्राणी मानते हैं जिनमें कोई व्यक्तिगत घनिष्ठता नहीं होती है। परन्तु सच्चा परमेश्वर हमारा पिता बनना चाहते है और हमारे साथ घनिष्ठ संबंध बनाना चाहते है।

यीशु जीवित रहे, मरे और फिर जी उठे ताकि हम परमेश्वर के साथ पिता-पुत्र का रिश्ता बना सकें और उन्हें "अब्बा-पिता" कह सकें (1 यूहन्ना 3:1-3)। इससे हमें अचंभित होना चाहिए और हमें आश्चर्य से भर जाना चाहिए, लेकिन हम अक्सर इसे हल्के में ले लेते हैं और इसके अर्थ की गहराई को समझने में असफल हो जाते हैं।

यीशु के समय में, यहूदियों के लिए परमेश्वर को "पिता" कहना असामान्य और यहाँ तक कि आश्चर्यजनक भी था। लेकिन यीशु ने अपने शिष्यों को "हमारे पिता" कहकर प्रार्थना करना सिखाया। पुराने नियम में परमेश्वर के लिए शायद ही कभी "पिता" शब्द का प्रयोग किया गया हो। यदि किया भी गया, तो यह केवल निर्माता के बजाय मुक्तिदाता के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है। उदाहरण के लिए, **यशायाह 63:16-17** और **64:8-9** में, इस्राएल के पाप और पश्चाताप के संदर्भ में परमेश्वर को पिता कहा गया है। ये वचन दर्शाते हैं कि परमेश्वर और

इस्राएल के बीच का संबंध विशेष था और केवल सृजन पर नहीं, बल्कि एक वाचा पर आधारित था।

समस्त पुराने नियम में, परमेश्वर का पितृत्व इज़राइल के साथ उनके वाचा संबंधी के निकटता से जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, मूसा ने इस्राएलियों को याद दिलाया कि उन्हें परमेश्वर ने अपने प्रिय लोगों के रूप में चुना था (व्यव. 14:1-2)। इसी तरह, भजन 103:13 परमेश्वर की करुणा की तुलना एक प्रेम करने वाले पिता से करता है, और यिर्मयाह 31:20 अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम की बात करता है, भले ही जब वे पाप करते थे। ये वचन दर्शाते हैं कि परमेश्वर के पितृत्व में परवाह, करुणा और मुक्ति शामिल है।

यीशु ने इस विचार को आगे बढ़ाते हुए सिखाया कि परमेश्वर का पितृत्व केवल इज़राइल के लिए नहीं , बल्कि उन सभी के लिए उपलब्ध है जो उस पर विश्वास करते हैं। यीशु ने पिता के साथ अपने अनूठे रिश्ते को साझा करते हुए कहा, "मैं और पिता एक हैं" (यूहन्ना 10:30) और "जिसने मुझे देखा उसने पिता को देखा है" (यूहन्ना 14:9)। हालाँकि, उन्होंने यहूदियों की धारणाओं को भी चुनौती दी, यह बताते हुए कि उनके कार्यों से पता चलता है कि वे शैतान के बच्चे थे, परमेश्वर के नहीं (यूहन्ना 8:37-59)। यीशु ने इस विचार को आगे बढ़ाते हुए सिखाया कि परमेश्वर का पितृत्व केवल इज़राइल के लिए नहीं , बल्कि उन सभी के लिए उपलब्ध है जो उस पर विश्वास करते हैं। यीशु ने पिता के साथ अपने अनूठे रिश्ते को साझा करते हुए कहा, "मैं और पिता एक हैं" (यूहन्ना 10:30) और "जिसने मुझे देखा उसने पिता को देखा है" (यूहन्ना 14:9)। हालाँकि, उन्होंने यहूदियों की धारणाओं को भी चुनौती दी, यह बताते हुए कि उनके कार्यों से प्रतीत होता है कि वे शैतान के संतान थे, परमेश्वर के नहीं (यूहन्ना 8:37-59)। इससे वे नाराज़ हुए, परन्तु इस बात पर भी प्रकाश डाला कि परमेश्वर की संतान होने के लिए वंश से कहीं अधिक की आवश्यकता होती है - इसके लिए विश्वास और आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है। किसी ने कहा, "हम जाति से नहीं बल्कि अनुग्रह से परमेश्वर की संतान बनते हैं"!

प्राकर्तिक रूप से, हम परमेश्वर की संतान नहीं हैं, लेकिन यीशु में विश्वास और पवित्र आत्मा के कार्य के माध्यम से, हमें परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध में लाया जाता है। जैसा कि पौलुस ने लिखा, "और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है।" (गलातियों 4:6-7)।

संक्षेप में, परमेश्वर को "पिता" कहना एक विशेष, मुक्तिदायी रिश्ते को दर्शाता है। यीशु के माध्यम से, हमें इस वाचा में आमंत्रित किया गया है, हम परमेश्वर के संतान बन सकते हैं और उनके प्रेम और देखरेख का गहराई से व्यक्तिगत रूप से अनुभव कर सकते हैं।

विचारक अंक:

- परमेश्वर का आपके "अब्बा पिता" होने का विचार आपके लिए व्यक्तिगत रूप से क्या मायने रखता है?

- आपके सांसारिक पिता के कार्य, स्वर्गीय पिता की समझ को कैसे प्रभावित करते हैं?
- यह जानने से आपके जीवन में क्या फर्क पड़ता है कि आप परमेश्वर से केवल सृष्टिकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रेम करने वाले पिता के रूप में उनके निकट जा सकते हैं?
- क्या आपके जीवन में कुछ ऐसा है जो आपको अपने पिता के रूप में परमेश्वर के प्रेम को पूरी तरह से अपनाने से रोकता है?
- प्रत्येक दिन, अपने आप को याद दिलाएं कि आप परमेश्वर की संतान हैं और परमेश्वर को "अब्बा पिता" कहते हैं और उनके साथ वह सब बताते है जिससे आप गुजर रहे हैं, अपनी खुशी, जीवन की चुनौतियां, भय और चिंताएं जैसे कोई बच्चा अपने प्रेममय पिता से बात कर रहा हो।

अतिरिक्त चिंतन के लिए: 1 यूहन्ना 3:1-3, गलतियों 4:6-7, भजन सहिता 103:13, यिर्मयाह 31:20, यशाह 63:16-17।

दिन 30.

इम्मानुएल- עִמָּנוּ אֵל:- परमेश्वर हमारे साथ

आइए मत्ती 1:18-23 पढ़ें:

अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इकट्ठे होने के पहले से वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। 19 अतः उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की। 20 जब वह इन बातों की सोच ही में था तो परमेश्वर का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, “हे यूसुफ! दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। 21 वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु* रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार करेगा।” 22 यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो (यशा. 7:14) 23 “देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा,”(जिसका अर्थ है - परमेश्वर हमारे साथ)।

इब्रानी नाम '**इमैनुएल**' का अर्थ है '**परमेश्वर हमारे साथ**'।

आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में परमेश्वर की उपस्थिति में रहने का सबसे बड़ा आशीष मिला था। हर दिन, वे कह सकते थे 'इमैनुएल' परमेश्वर हमारे साथ है! परन्तु एक बार जब उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया, तो उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर भेज दिया गया और उन्होंने परमेश्वर की छवि और महिमा खो दी। तब से, सभी लोगों के लिए यह ज्ञात बात थी कि यदि वे परमेश्वर को उसकी पूर्ण महिमा और वैभव में देखेंगे तो वे मर जायेंगे। लेकिन परमेश्वर की योजना मानवजाति को उसकी उपस्थिति में पुनर्स्थापित करने की थी क्योंकि परमेश्वर प्रेम है! मत्ती यशायाह (यशायाह 7) की भविष्यवाणी को दुहरा रहा है कि मसीहा को

इम्मानुएल कहा जाएगा जिसका अर्थ है कि परमेश्वर हमारे साथ है। यूहन्ना 1:1-5 यीशु को वचन के रूप में प्रकट करता है, वचन परमेश्वर है और यूहन्ना 1:14 बताता है कि यीशु देह में वह वचन है जो हमारे बीच रहता है। यीशु वास्तव में इम्मानुएल हैं - 'परमेश्वर हमारे साथ'।

यीशु देह में प्रकट हुए लेकिन परमेश्वर की संपूर्ण महिमा और वैभव में नहीं। इसीलिए लोग बिना अपनी जान गंवाए उसे देख और छू सकते थे। लेकिन इससे यह तथ्य नहीं बदला कि वह वास्तव में 'इमैनुअल' हैं।

इम्मानुएल हमारे साथ इसलिए आया ताकि वह हमें इसका स्वाद दे सके कि स्वर्ग में कैसा होगा जब हम परमेश्वर के साथ उसकी सारी महिमा और वैभव में अनंत काल बिताएंगे।

1 यूहन्ना 3:1-3 देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ, और हम हैं भी; इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना। 2 हे प्रियों, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब यीशु मसीह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि हम उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। 3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है*, जैसा वह पवित्र है।

जब *इम्मानुएल* पहली बार परमेश्वर के रूप में आया तो पिता ने हमें परमेश्वर की संतान बनाने के लिए उसके माध्यम से अपना प्रेम उंडेला। वह वापस आएगा और हम उसे वैसे ही देखेंगे जैसे वह है - पूरी महिमा के साथ! हम उनकी महिमा देखकर मरेंगे नहीं, बल्कि हमें भी उनके जैसा महिमामय शरीर दिया जायेगा। तभी हम उनके घर यानी स्वर्ग में प्रवेश कर पाएं! यूहन्ना हमें यह भी याद दिलाता है कि जो लोग उसमें ऐसी आशा रखते हैं वे स्वयं को वैसे ही पवित्र करते हैं जैसे वह पवित्र है। पवित्रता और धार्मिकता की खोज उन लोगों की निशानी है जो इम्मानुएल के लिए तरस रहे हैं, उनके दूसरे आगमन तक, पवित्र आत्मा हमारे अंदर *'इमैनुअल' - 'परमेश्वर हमारे साथ'* के रूप में निवास करता है!

विचारक अंक:

- मत्ती इस वादे के साथ शुरू और समाप्त होता है कि परमेश्वर हमारे साथ है (मत्ती 28:20)। यदि आप प्रत्येक दिन की शुरुआत और अंत इस दृढ़ विश्वास के साथ करें कि परमेश्वर आपके साथ है तो आपके जीवन में किस तरह बदलेगा?
- क्या आप सचमुच यीशु के प्रकट होने की लालसा कर रहे हैं?
- पवित्र आत्मा के साथ आपकी संगति कैसी है? क्या आप उनके मार्दर्शन पर ध्यान दे रहे हैं और उन पर चल रहे हैं?
- यीशु को इम्मानुएल के रूप में भेजने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए समय निकालें - परमेश्वर हमारे साथ। सिखाने, मार्गदर्शन करने, सलाह देने के लिए पवित्र आत्मा को हमारे अंदर वास करने के लिए भेजने के लिए उसे धन्यवाद दें

अतिरिक्त चिंतन के लिए: • यूहन्ना 1:1-5,14; लूका 7:11-17; मरकुस 4:35-41; यूहन्ना 14

दिन 31.
Λόγος - लोगोस - वचन

यूहन्ना 1:1-3 आदि में* वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। 2 यही आदि में परमेश्वर के साथ था। 3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।

यूनानी भाषा का यह शब्द लोगोस यहाँ 'वचन" के लिए इस्तेमाल किया गया है। यह यीशु मसीह का नाम या उपाधि है, जिसे तीनो में पहले से मौजूद दूसरे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। यूनानी शब्द 'लोगोस' का अर्थ है 'वचन', 'वाणी' या 'तर्क'। यूहन्ना ने परमेश्वर को बुलाने के लिए इस शब्द का आविष्कार नहीं किया था। इसका उपयोग अक्सर पुराने नियम के इब्रानी अनुवाद में किया जाता था। इब्रानी बाइबिल में, 'लोगोस' या 'वचन' के लिए शब्द "मीमरा" का इस्तेमाल किया गया है ।

यूहन्ना 1:14 "वचन देहधारी हुआ और और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया।" वह यीशु है!

प्रकाशितवाक्य 19:13 में यीशु मसीह को "परमेश्वर का वचन" कहा गया है, जो प्रकट और प्रकटकर्ता दोनों के रूप में उनके व्यक्तित्व और उनके कार्य के संदर्भ में है।

यूहन्ना 1:18 परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा*, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी ने उसे प्रगट किया। यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, अदृश्य परमेश्वर की हूबहू छवि और प्रतिरूप है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुएं सृजी गईं: स्वर्ग में और पृथ्वी पर, दृश्य और अदृश्य, चाहे सिंहासन हों या शक्तियां या शासक या अधिकारी, सभी चीजें उसके द्वारा और उसके लिए बनाई गई हैं। वह सभी चीज़ों से पहले है और उसमें सभी चीज़ें एक साथ टिकी हुई हैं।**(कुलुस्सियों 1:15-17)।**

यूहन्ना का इरादा अपने दर्शकों को यह बताना है कि यीशु वास्तव में परमेश्वर हैं। परमेश्वर को लोगोस या वचन कहा जाता है, और यीशु को यूहन्ना द्वारा वचन भी कहा गया है। यूहन्ना साबित करता है कि यीशु वास्तव में परमेश्वर है।

यीशु के वचन होने के कुछ पहलू:

- यीशु अनन्त और सार्वकालिक हैं - "आदि में वचन था"
- यीशु परमेश्वर है - “वचन परमेश्वर था”
- यीशु परमेश्वर के साथ थे - "वचन परमेश्वर के साथ था"
- यीशु सभी चीज़ों का निर्माता है - “उसके माध्यम से सभी चीज़ें बनाई गईं; उसके बिना ऐसा कुछ भी नहीं बना जो बनाया गया हो।”
- यीशु जीवन का दाता है - "उसमें जीवन था" (यूहन्ना 1:4)
- यीशु देहधारी परमेश्वर हैं जो हमारे बीच रहे - "वचन देहधारी हुआ और उसने हमारे बीच अपना वास बनाया"

परमेश्वर का वचन कितना शक्तिशाली है? परमेश्वर ने अपने वचन से सब कुछ बनाया। जैसे. **उत्पत्ति 1:3** और परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो, और उजियाला हो गया। (उत्पत्ति 1 का अध्ययन करें)
जब एक भयंकर तूफ़ान ने उनकी नाव पर प्रहार किया, तो प्रेरितों को डर था कि वे मर जायेंगे, यीशु ने ये शब्द कहे ““शान्त रह, थम जा!”! और प्रकृति ने सुनी और उसका पालन किया।

जब यीशु लाजर की कब्र के पास पहुंचे जहां उन्हें 4 दिनों तक दफनाया गया था, तो यीशु ने अपनी आवाज उठाई और ये शब्द बोले "लाजर, बाहर आओ!"। मरा हुआ आदमी जीवित हो उठा और कब्र से बाहर निकला और जयजयकार करता रहा।

वचन कितना शक्तिशाली है? यीशु का लोगोस कितना शक्तिशाली है? यीशु के शब्द कितने शक्तिशाली हैं?

विचारक अंक :

- क्या आप यीशु को देहधारी परमेश्वर के रूप में पहचानते हैं?
- क्या आप यीशु के वचनो को अनुसरण करने के योग्य मानते हैं?
- क्या आपको अध्ययन करने, मनन करने और परमेश्वर के वचन को जीवन में लागू करने की आदत है?

अतिरिक्त चिंतन के लिए:

- उत्पत्ति 1; इब्रानियों 1; भजन संहिता 119

उपसंहार

हमें आशा है कि इस शांत समय की श्रृंखला ने आपको हमारे अद्भुत और गौरवशाली परमेश्वर के करीब आने में मदद की है।

हमारी प्रार्थना, जैसा की प्रेरित पौलुस ने इफिसुस के शिष्यों के लिए प्रार्थना की थी, वह यह है: मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ, 15 जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक

घराने का नाम रखा जाता है, 16 कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पा कर बलवन्त होते जाओ, 17 और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नींव डालकर, 18 सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी* तक परिपूर्ण हो जाओ। 20 अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है, 21 कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। **आमीन। इफिसियों 3:14-21**

पवित्र आत्मा आपको यह समझने की शक्ति प्रदान करता रहे कि मसीह का प्रेम कितना व्यापक, लंबा, ऊँचा और गहरा है। वह ज्ञान आपको बदले में पूरे दिल और दिमाग से उससे प्रेम करने के लिए प्रेरित करे। इसका परिणाम यह हो कि आप "परमेश्वर की संपूर्ण परिपूर्णता से परिपूर्ण" हो जाएँ। हम आपसे भी अनुरोध करते हैं कि आप इसके लिए प्रार्थना करें. हमारा विश्वास उस पर है "जो हमारे भीतर काम कर रही अपनी शक्ति के अनुसार हम जो भी माँगते हैं या कल्पना करते हैं, उससे कहीं अधिक करने में सक्षम है"!

साथ ही, हम उन सभी भाइयों और बहनों के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहेंगे जिन्होंने अपना समय इस शांत समय श्रृंखला का अध्ययन और तैयारी करने में बिताया, साथ ही उन लोगों के प्रति भी जिन्होंने संपादन, अनुवाद, प्रूफरीडिंग और सभी संतों तक प्रसारित करने में सहायता की।

सहयोगी:

अभिषेक (लखनऊ)- चौथा दिन
अरासु (कोयंबटूर) - दिन 25
बीना फिलिप (कोट्टायम) - दिन 9, 23
बेनी सोज़ा (कोझिकोड) - दिन 3, 11, 14, 26
दिनेश जॉर्ज (बैंगलोर) - दिन 20
जैस्मीन ब्रिटो (कोच्चि) - दिन 27
जेबिन (कोच्चि) - दिन 19
जॉन ब्रिटो (कोच्चि) - दिन 31
जॉनसन (बैंगलोर) - दिन 6, 16
किरण बाबू (कोच्चि) - दिन 21
लोगनाथन (चेन्नई) - दिन 15
मोनिका सचिन (कोच्चि) - दिन 28

प्रसीता (इरोड) - दिन 12
राजिमोल सोज़ा (कोझिकोड) - दिन 10
सचिन (कोच्चि) - दिन 17
साजी एलेक्स (त्रिवेंद्रम) - दिन 24
शैजस फिलिप (कोट्टायम) - दिन 2, 7, 13, 18
शीबा एलेक्स (त्रिवेंद्रम) - दिन 22
सुबिन थॉमस (कोच्चि) - दिन 30
सुंदरारासन (बैंगलोर) - दिन 29
सुष्मिता (बैंगलोर) - दिन 5, 8
विजय किरण (बैंगलोर) - दिन 1

संपादन:
शैजस फिलिप
बीना फिलिप
शीबा एलेक्स
रेखा अब्राहम (कोट्टायम)
सुमा विश्वनाथन (कोट्टायम)

हिंदी अनुवाद और पेज सेटिंग:
रॉबर्ट मसि

प्रूफरीडिंग:
सुमा विश्वनाथन